www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

3rd MAY 2020
Issue 01 • Part 01

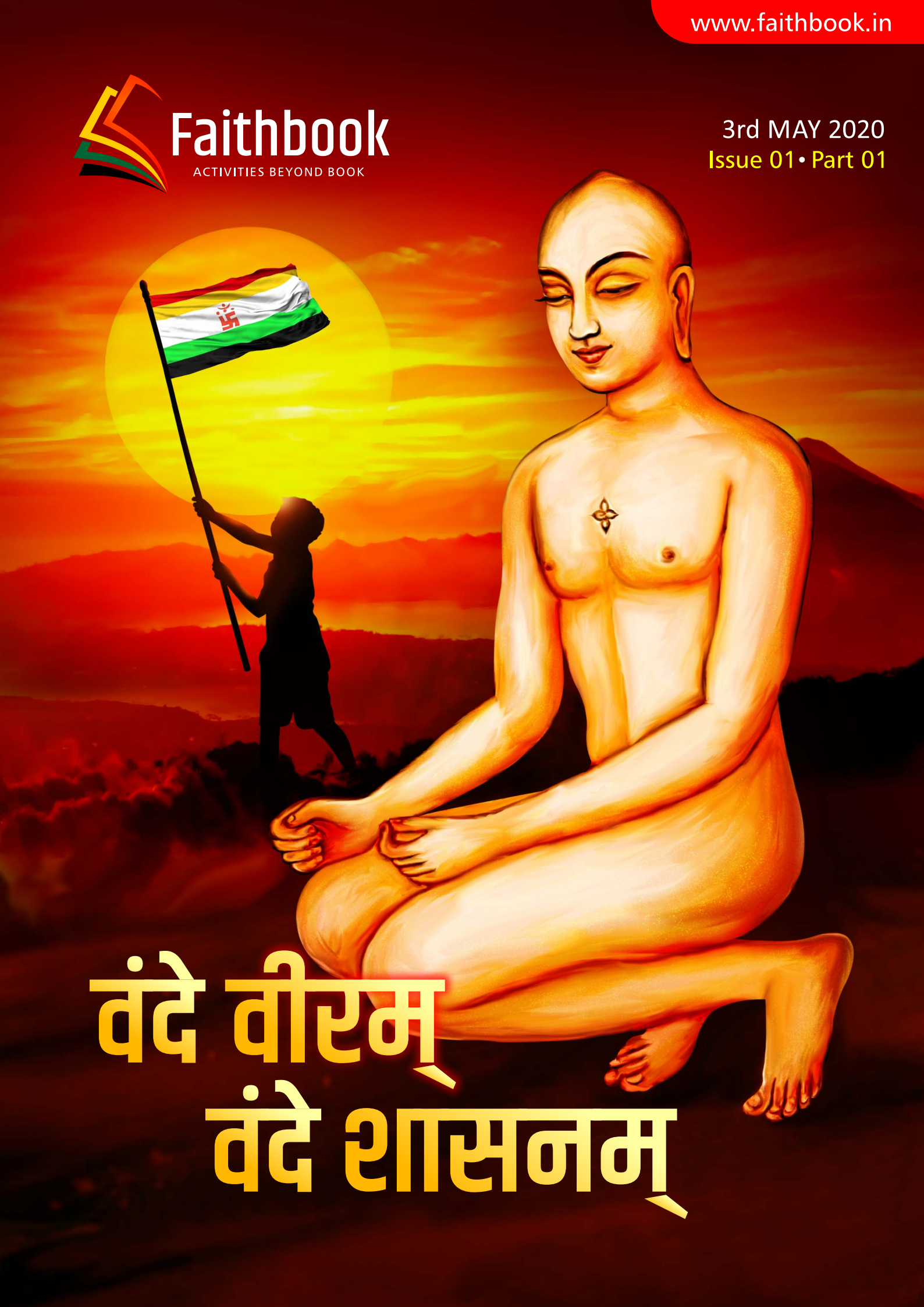

वंदे वीरम्
वंदे शासनम्

करुणा
शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान

कृपा
पू. सिद्धांत महोदधि आचार्य श्री प्रेम सूरीश्वरजी महाराजा
पू. वर्धमान तपोनिधि आचार्य श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराजा
पू. सिद्धांत दिवाकर गच्छाधिपति गुरुमां श्री जयघोष सूरीश्वरजी महाराजा

आशिष
पू. प्रशांतमूर्ति गच्छाधिपति श्री राजेंद्र सूरिश्वरजी महाराजा
पू. संघ शासन कौशल्याधार गुरुदेव आचार्य श्री जयसुंदर सूरिश्वरजी महाराजा

स्नेह
पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा.
पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक
शौर्य शांति ट्रस्ट

हे शुभारम्भ ...
हो शुभारम्भ...
मंगल बेला आई

प्रणाम,
हृदय अत्यन्त आनन्दित है।
क्योंकि पूज्यपाद सुविशाल गच्छाधिपति श्री जयघोष सूरीश्वरजी महाराजा का एक स्वप्न आज साकार हो रहा है। और ऊपर से सोने में सुहागा, कि शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान का केवलज्ञान कल्याणक और शासन स्थापना (वैशाख सुदी 11) के पर्वोत्सव पर सम्यक्ज्ञान का प्रकाशन होने जा रहा है।

हमारे इस प्रयास की अनुमोदना करते हुए पूज्य गुरु भगवन्तों ने अत्यन्त रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेख भेजकर हम पर असीम उपकार किया है। सभी पूज्यों के चरण-कमल में कोटिशः वन्दना।

प्रभु का शासन सभी जीवों को प्राप्त हो,
प्रभु की करुणा समग्र विश्व में विस्तृत हो,

प्रभु द्वारा प्ररुपित मार्ग पर चलकर सुखी बनें इस हेतु से सच्ची दिशा बताने वाली यह Knowledge Book का Every Week प्रकाशन होगा।

मित्रों! यह मात्र पुस्तिका ही नहीं, बल्कि मिठाई का Box है।

तो आप सब लोगों में यह मिठाई बाँटते रहेंगे न!

- नरेन्द्र गाँधी, संकेत गाँधी

संपर्क सूत्र : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095
Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

About
Faithbook, The Knowledge Book

Faithbook knowledge book एक ऐसी knowledge book है जिसमें आगम, अध्यात्म, इतिहास, नवलकथा, Short Stories, आहार आदि विविध विषयों पर प्रभु वीर के सिद्धान्तों को केन्द्र में रखते हुए लेख प्रकाशित किए जाते हैं। ताकि हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए, हमें सच्ची दिशा मिले और हमारे ज्ञान में वृद्धि हो।

यह knowledge book दस से बारह पेज में pdf format में हर रविवार WhatsApp से भेजी जाएगी। इसमें 3 से 4 विषयों के लेख होंगे। इस प्रकार 3-4 लेखों के साथ हर माह के चार रविवार इसके अंक भेजे जाएँगे, इस प्रकार इसका एक अंक पूरा होगा।

आज की भाषा में कहूँ तो पूरा पिज्जा तैयार होने के बाद उसके Pieces किए जाते हैं, फिर खाया जाता है। उसी प्रकार यह Faithbook knowledge book भी monthly bulletin है। पूरी book तैयार होने के बाद इसके चार भाग किए जाएँगे और उस महीने के पहले रविवार से चौथे रविवार तक एक-एक भाग भेजा जाएगा। इस प्रकार एक महीने के अंक में प्रकाशित लेखों के आगे के part आने वाले अंकों में Continue रहेंगे।

इस knowledge book में प्रकाशित लेखों के लिए हमें पूज्य गुरु भगवन्तों का आशीर्वाद, प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिला है, उन सभी पूज्यों के चरणों में हम कृतज्ञतापूर्वक वन्दन करते हैं, और साथ ही इस knowledge book को युवावर्ग तक पहुँचाने और उनमें इसके प्रति एक चाह उत्पन्न करने के लिए Website, Social Media पर हमारी टीम लगातार प्रवृत्तिशील है, इस बात का मुझे आनन्द है। इस knowledge book की hard copy बहुत कम प्रिंट होगी, और mostly इसे WhatsApp से ही भेजा जाएगा।

WhatsApp से जो copy भेजी जाएगी, वह हिन्दी भाषा में होगी, किन्तु जो लोग इसे English में पढ़ना चाहते हैं वे हमारी Website के Blog से इसे पढ़ सकते हैं। Blog में हिन्दी और English, दोनों भाषाओं में सभी लेख उपलब्ध हैं, और आप उन्हें Download भी कर सकते हैं।

- सम्पादक

लाभार्थी

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन जिनालय जैन तीर्थ पेढी

देवचंद नगर , भायंदर वेस्ट

समता सागर श्रमण भगवान महावीर स्वामी का

केवलज्ञान कल्याणक

पूज्य आचार्य श्री जयसुंदर सूरिश्वरजी म.सा.

वंदे वीरम्

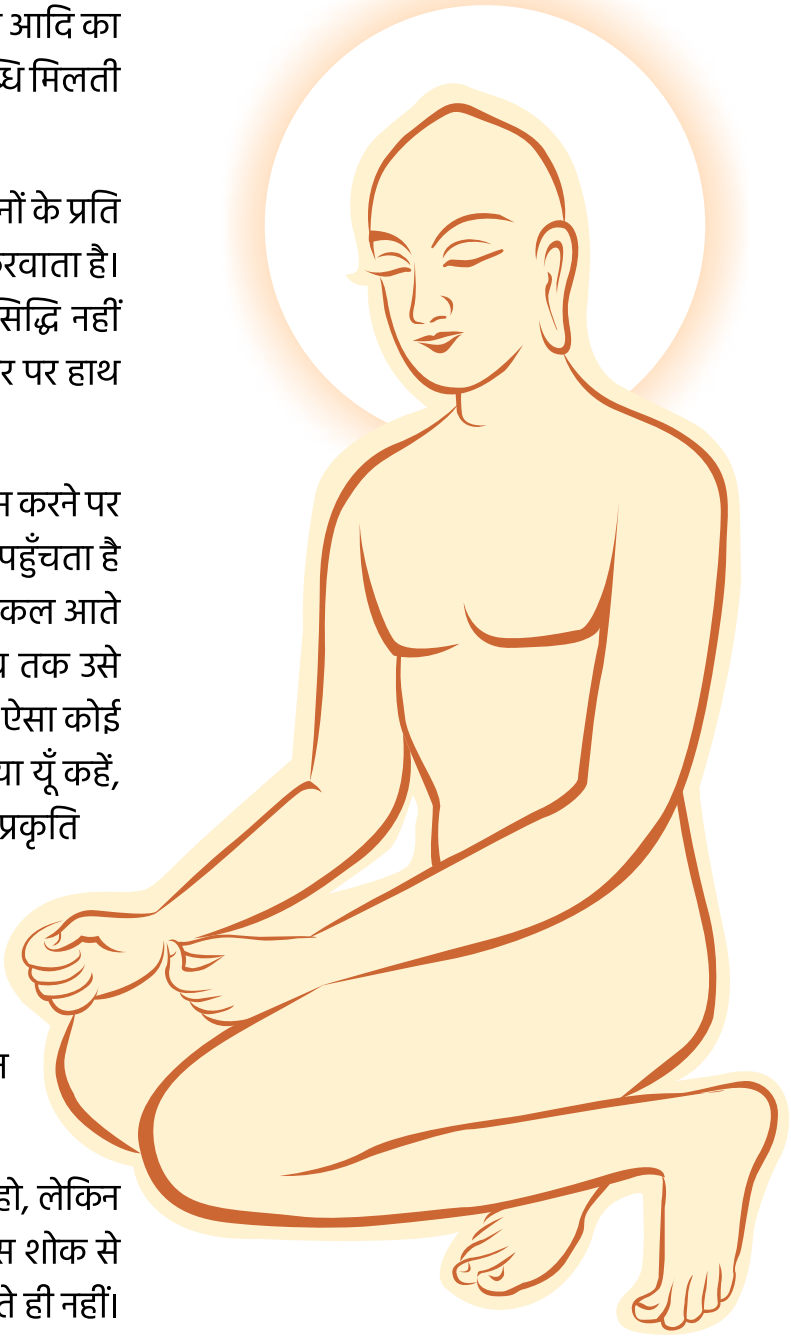

केवलज्ञान प्राप्त करना आसान नहीं होता। भयंकर राक्षस जैसे अज्ञान और मोह रूपी आन्तरिक शत्रुओं से प्रचण्ड समता और विवेकपूर्वक दीर्घकाल तक लड़कर मोह आदि का क्षय करने के बाद ही केवलज्ञान की अनमोल उपलब्धि मिलती है।

मोह यानी खान-पान, मान, काम आदि व्यसनों के प्रति भारी आकर्षण, जो जीव को बलात् पाप-प्रवृत्तियाँ करवाता है। घोर पाप के उदय और पापवृत्तियों के चलते इष्ट सिद्धि नहीं मिलती, उल्टे भारी नुकसान होता है, फलतः जीव सर पर हाथ रखकर रोता है।

रुदन, शोक का एक प्रकार है। कठोर परिश्रम करने पर भी इच्छित वस्तु की प्राप्ति न हो तो हृदय को आघात पहुँचता है और धीरज का बांध टूटता है, और आँखों से आँसू निकल आते हैं। बालक का जन्म हो, फिर उसे भूख लगे, तो जब तक उसे भोजन न मिले, वह तब तक रोता रहता है। दुनिया में ऐसा कोई विरला ही बालक होता है जो जन्म के बाद न रोए। या यूँ कहें, कि हँसने का नसीब तो बाद में ही जागृत होता है, प्रकृति पहले रोना ही सिखाती है।

बड़ा आश्चर्य तो यह है, कि तीर्थंकर भगवान का भी चरम भव में जन्म तो हुआ, पर वे रोए नहीं। उन पर आपत्तियों, संकटों और उपसर्गों का पहाड़ टूटा, लेकिन फिर भी प्रभु महावीर नहीं रोए।

आजकल तो यह देखने को मिलता है, कि जरूरत न हो, लेकिन दूसरे को मिला, लेकिन मुझे क्यों नहीं मिला, बस इस शोक से लोग बच्चे की तरह रोने लगते हैं। आँसू तो मानो रुकते ही नहीं।

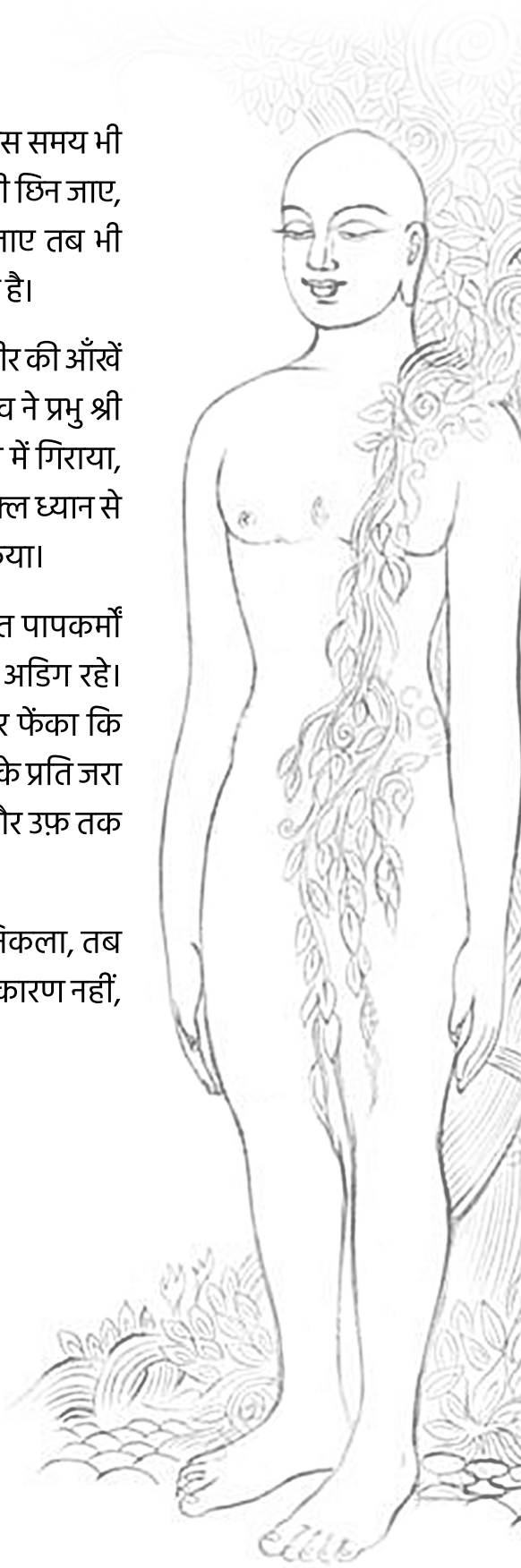

कोई असह्य बीमारी आती है, तो जी ऊपर-नीचे हो जाता है, उस समय भी व्यक्ति का हृदय रोने लगता है। अरे ! कभी अपने हाथ में आया हुआ लड्डू भी छिन जाए, तो भी व्यक्ति रोने लगता है। कभी अपने खास सम्बन्धी की मृत्यु हो जाए तब भी व्यक्ति सच्चा-झूठा रो देता है। कभी अन्याय हो जाए, तो भी वह रोने लगता है।

दूसरा बड़ा आश्चर्य यह है, कि कभी न रोने वाले भगवान महावीर की आँखें भी एक बार भीग गई थी। अभव्य जीव संगम नामक एक आतंकवादी देव ने प्रभु श्री महावीर को बहुत तंग किया, पीड़ा और तकलीफें दी, आतंक की आँधी में गिराया, गालियाँ दी और मरणान्त उपसर्ग किए। फिर भी भगवान अपने पवित्र शुक्ल ध्यान से लेश मात्र भी चलित नहीं हुए, हिम्मत नहीं हारी और अटूट धीरज धारण किया।

उन्होंने कोई प्रतिकार नहीं किया, क्योंकि उन्हें अपने पूर्वकृत पापकर्मों का सफाया करना था। इसलिए उन्होंने शान्ति से उपसर्ग सहे, अटल - अडिग रहे। संगम देव ने संकटों के पहाड़ के समान कालचक्र इतना जोर से प्रभु पर फेंका कि समतावीर प्रभु घुटने तक जमीन में दब गए। फिर भी उन्हें उस पापी संगम के प्रति जरा भी द्वेष, नफरत या अरुचि उत्पन्न नहीं हुई, एक भी अपशब्द नहीं कहा और उफ़ तक नहीं किया।

थक-हार कर अन्ततः जब संगम पराजित हाथों से वहाँ से निकला, तब इस आश्चर्य का सृजन हुआ। प्रभु की आँखें नम हुई, अपने पर हुए कष्ट के कारण नहीं, बल्कि संगम के भयावह भविष्य और कष्ट का विचार करके हुई।

उपसर्गो बहु काळ करीने, संगम पाछो वळियो,
प्रभु हैये ते पापी प्रत्ये उमट्यो करुणा दरियो;
मारे काज आ जीव बिचारो काळ घणुं ए भटकशे,
दुःख अनन्ता सहेशे तो पण अंत कदि' नवि लहेशे।
ते दिन प्रभु आंसू भीना रे, वीरना लोचनियां में दीठा !

प्रभु! आपको केवलज्ञान तो बाद में मिला, किन्तु उससे पहले ही आपने मुँह बन्द रखकर भी हमें बहुत बड़ा बोधपाठ दिया :

जातनी पीडाओना रोदणा रोता नहीं,
बीजाओनी पीडाओमां चेनथी सोता नहीं।

धन्य हो प्रभु वीर को ! धन्य हो उनकी करुणास्रोत को ! वन्दन हो श्री वीर वर्द्धमान को ! सहन किया, तो केवलज्ञान मिला, और शासन की स्थापना करके समस्त जीवों को दुःख मुक्ति और पाप मुक्ति का मार्ग बतलाया

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

प्रतिकार

धन के बिना धर्म नहीं होता तो धन मूर्छा त्याग का उपदेश क्यूं?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरीश्वरजी म.सा.

गीतार्थता के शिखर श्रमणी गणनायक पूज्य आचार्य भगवन्त हम पर उपकार करके सत्य, शास्त्र और सिद्धान्त के सहारे हमारे भ्रम, व्यामोह और व्युदग्रह को दूर करेंगे, और प्रभु के शासन का वास्तविक दर्शन हमें करवाएँगे। इस 'प्रतिकार' कॉलम के जरिए हमारे मन में उठती शंकाओं का शास्त्रीय समाधान हमें मिलेगा। पूज्य गुरु भगवन्त की गीतार्थता का लाभ हमें प्राप्त होगा।

प्रश्न : प्रवचनों में सदैव धन-त्याग, धन-मूर्च्छा त्याग आदि तथा व्यापार-धन्धे की बजाय धर्मकार्य में अधिक समय देने की बातें की जाती है। और दूसरी ओर उपदेश देने वाले ही दान देने की प्रेरणा भी देते हैं। ट्रस्टीगण फण्ड, बोली, चढ़ावे आदि के द्वारा पैसे इकट्ठा करते हैं।

यदि वास्तव में व्यापार-धन्धा और पैसा छोड़ दें, तो फण्ड में राशि कौन लिखाएगा? और धर्म भी बिना पैसे के नहीं होता। तो फिर धन-त्याग की बात क्यों की जाती है? जिनालयों में पहली पूजा आदि के लिए भी बोली होती है। निर्धन व्यक्ति ये सब लाभ कैसे ले पाएगा? क्या ये बातें विरोधाभासी नहीं है? दोगली बातें करना ढोंग नहीं है ?

उत्तर : पहली बात इस प्रश्न का अधिकांश हिस्सा गलतफहमी का शिकार है। गृहस्थ को धन्धा करना छोड़ ही देना चाहिए, पैसे भी पूरे छोड़ देने चाहिए, निर्धन बन जाना चाहिए - ऐसा कोई भी उपदेश जिनशासन द्वारा स्वीकार नहीं है। गृहस्थ के लिए तो न्यायसंगत वैभव को मार्गानुसारी का गुण बताया गया है। इसी प्रकार धर्म-पुरुषार्थ, अर्थ-पुरुषार्थ और काम-पुरुषार्थ इन तीनों के मध्य एक ऐसा सन्तुलन बनाना होता है, कि तीनों में से किसी में भी बाधा न पहुँचे। इस प्रकार **'त्रिवर्ग अबाधा'** को भी गुण कहा गया है।

इसीलिए शास्त्रों में प्रभु की अष्टप्रकारी पूजा का मुख्य समय मध्याह्न काल का बताया गया है और साथ ही यह भी कहा गया है, कि यदि धन्धे का समय भी वही

हो, तो धंधा डिस्टर्ब ना हो वैसे पूजा का समय थोड़ा आगे-पीछे किया जा सकता है। अरे! धन्धे में मुश्किलें न आए और सरलता से धनप्राप्ति हो इसके लिए व्यापार हेतु घर से निकलते समय प्रणिधान पूर्वक तीन नवकार गिनने के लिए भी कहा गया है। यदि कोई श्रावक ऐसा कहे कि मैं दिन भर प्रभु-पूजा, सामायिक, जाप, तप, स्वाध्याय आदि आराधना करता रहूँगा और जीवन निर्वाह के लिए साधु भगवन्तों की भाँति घर-घर जाकर भिक्षा लूँगा, तो शास्त्रों में इसकी मनाही है और यह बताया गया है कि श्रावक को उचित समय पर उचित व्यवसाय करना ही चाहिए। यदि पूरा दिन सामायिक करने का ध्येय हो, तो फिर दीक्षा ही ले लेनी चाहिए। गृहस्थाश्रम में रहकर भिक्षा से जीवन निर्वाह करने से धर्म लज्जित होता है।

प्रश्न : महाराज ! न्यायसम्पन्न वैभव हमारा गुण है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि निर्धनता दुर्गुण है। अर्थ-पुरुषार्थ, अर्थात् धन्धे में व्यवधान नहीं हो, धन्धे में disturb होता हो तो प्रभु पूजा का समय आगे-पीछे किया जा सकता है। धन्धे में सफलता के लिए घर से निकलते समय तीन नवकार भी गिनने चाहिए, हमारी दिनचर्या में धंधा का भी स्थान है। दिनभर धर्माराधना और भिक्षा से जीवन यापन हमें शोभा नहीं देता।

महाराज ! ये सब बातें अब पूरी तरह समझ आ गई। हमारे शास्त्रों में व्यापार की भी समझ दी गई है, यह सोचकर हमारी धर्म के प्रति श्रद्धा और भी बढ़ गई है। सही में हमारा धर्म बहुत practical है।

उपरान्त संसार त्यागी, अत्यन्त वैरागी, पूर्ण निःस्पृह, पूरे दिन अपनी साधना में मग्न रहने वाले और धन को सैकड़ों दोषों का मूल बताने वाले हमारे पूर्वाचार्यों ने हमारे व्यापार के बारे में इस प्रकार चिन्तन किया, यह जानकर ऐसी प्रतीति हुई कि हमारे धर्म में कहीं भी एकान्तवाद नहीं, बल्कि सर्वत्र अनेकान्तवाद है।

बहुत हर्ष की बात है !! लेकिन महाराज साहेब ! जब शास्त्रकारों ने हमें व्यापार करने की भी रीति बताई है, तो क्या हम पुरे सामर्थ्य से कोई भी व्यापार कर सकते हैं?

उत्तर : देखिए भाग्यशाली ! आधी बात मत पकड़िए, और उल्टी बात भी मत पकड़िए। शास्त्रकारों ने व्यापार के मामले में अनेक बातें कही हैं, जैसे

- ऐसा व्यवसाय जिसमें आरम्भ-समारम्भ हो, ऐसे कर्मादान के व्यापार नहीं करने चाहिए।
- कुल की परम्परा से चले आ रहे उचित व्यापार के सिवाय और कोई व्यापार न करें।
- अनीति, अप्रामाणिकता और विश्वासघात न करें।
- त्रिवर्ग अबाधा, अर्थात् धर्माराधना disturb हो, या पारिवारिक life disturb हो इस प्रकार धन्धा न करें।

जिसमें उपरोक्त नियमों का पालन न होता हो ऐसे व्यवसायों का शास्त्रकारों द्वारा किया गया निषेध समझने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त और भी बातें हैं, जो फिर कभी बताई जाएगी।

किन्तु समय और शक्ति का अधिकतम प्रयोग धन्धे में करना ये कहाँ बताया है? इस प्रश्न का उत्तर त्रिवर्ग अबाधा गुण से प्राप्त होता है। सब कुछ इस प्रकार सन्तुलित करना है, कि कोई भी अंग disturb न हो। बाकी, जो पुण्यशाली है, वह कम मेहनत से भी बहुत कमा लेता है, थोड़े समय में भी चाहिए उससे अनेक गुना अधिक कमा लेता है। ऐसे पुण्यशालियों को अपने बाकी के अधिक समय में क्या करना चाहिए?

(1) नए-नए व्यवसाय चालू करके धन और लोभ को बढ़ाना चाहिए? या
(2)भोगविलास और पाप-प्रवृत्तियाँ बढ़ानी चाहिए? या फिर
(3) धर्म बढ़ाना चाहिए?

इन प्रश्नों के जवाब में हमारे व्याख्यानों में कहा जाता है, कि व्यापार की बजाय धर्म में समय और शक्ति का उपयोग अधिक करना चाहिए।

हम इन तीनों विकल्पों पर विचार करेंगे, किन्तु उससे पहले मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा, कि ये बातें उसके लिए है जिसे आत्मा का थोड़ा भी विचार हो, नास्तिक के लिए नहीं।

(1) नए-नए व्यवसाय शुरु करना, यानी हर स्तर पर रिश्वत देना, झूठ बोलना, कहीं-कहीं सुरा-सुन्दरी की महफिल भी करवानी पड़ती है, और यदि एकाध धन्धे में कुछ भी ऊपर-नीचे हुआ तो फिर चिन्ता का कोई पार नहीं रहता, तो हमेशा बेचैनी रहती है। ऊपर से हमारा प्रतिस्पर्द्धी हमसे आगे न निकल जाए, इसलिए रोज कोई दांवपेच या गन्दे खेल करने पड़ते हैं।

पुण्य के सहकार के कारण लाभ तो हो जाता है, लेकिन साथ में लोभ का जोर भी बढ़ जाता है। एक बात हमेशा याद रखिए कि पैसे बढ़ने की Speed से लोभ के बढ़ने की Speed कई गुना ज्यादा होती है।

उदाहरणार्थ :

मिला हुआ धन	बढ़ा हुआ लोभ
1 करोड़	5 करोड़
5 करोड़	25 करोड़
25 करोड़	100 करोड़
100 करोड़	500 करोड़

अर्थात् इस दौड़ का कोई अन्त नहीं है। लोभ पर कोई लगाम नहीं होती, यह तो भागता है, बस भागता ही रहता है। कहीं शान्ति नहीं, कहीं फुरसत नहीं।

पहले अपने ग्रुप, अपने समाज में, अपने व्यापार मंडल में नम्बर वन बनने की इच्छा होती है, फिर इस नम्बर वन को टिकाए रखने की धमाचौकड़ी। (बड़े-बड़े उद्योगपतियों के जीवन में झाँककर देख

लीजिए) जीवन का एक ही लक्ष्य बन जाता है, पैसा ... पैसा और पैसा।

गैलेरी में खड़े होकर रास्ते का दृश्य देखकर रो रही सेठानी से नौकर ने पूछा, "माँजी ! आपकी आँखों में आँसू?" सेठानी बोली, "उस चौराहे पर देख। एक मजदूर और उसकी पत्नी सामान से भरा ठेला खींच रहे हैं। उनका 5-6 वर्ष का बच्चा उसी ठेले पर बैठा है। एक दूसरा छोटा सा बच्चा उस औरत ने अपनी साड़ी से बाँधकर रखा है। कैसा पुण्यशाली परिवार है, जो चौबीस घण्टे साथ रहता है। तूने हम चार जनों को एक हफ्ते में आधे घण्टे भी साथ बैठे देखा है? सेठ, बेटा और बेटी, सब अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त हैं। ये भी कोई जिन्दगी है?"

पैसे के पीछे दौड़ने वाले ऐसे धनवन्तो को :
न मानसिक शान्ति है, न पारिवारिक जीवन है, न शारीरिक सुख है, न धर्म, न समाज, कुछ नहीं।

और इस तरह 200-500 करोड़ तक पहुँचने वाले को 'मेरे 400 करोड़' 'मेरे 500 करोड़' ऐसा देख-देख कर खुश होने का सुख और अपने अहंकार को पुष्ट करने का सुख - इन दो सुखों के अलावा उसके पास ऐसा दूसरा सुख कौनसा है, जो 20-25 करोड़ कमाकर बैठ जाने वाले को नहीं है? यह आप ही बताइए। और 200 करोड़ से 500 करोड़ तक पहुँचने के लिए आँख बन्द करके जोखिम की और उल्टे गिरे, तो ये दो सुख भी नसीब नहीं होंगे। ऊपर से घोर आघात में घिर जाएँगे, वो अलग।

इस के आलावा , यदि पैसे को ही सर्वस्व मान लिया, तो सुकृत करने का मन ही नहीं रहेगा। फलतः नए पुण्य का बँध नहीं होगा, पुराना पुण्य तो भोग लिया। अर्थात् पूर्वभव के पुण्य की balance खत्म होते ही सीधे गिरने की बारी आएगी। आप देखिए, सामान्य व्यक्ति की तुलना में जिसके पास 200 करोड़ हो उसका सारा पैसा चला जाए, तो उसे अनेक गुना आघात लगेगा या नहीं? टेंशन, डिप्रेसन और सुसाइड तक की नौबत आ जाती है।

इसके सामने मुम्बई जैसे शहर में आज भी ऐसे अनेक श्रावक हैं जो अत्यन्त संतोषपूर्वक रहते हैं, अच्छे एरिया में फ्लेट है, दुकान भी अच्छी चलती है, कर्मचारियों को भी अच्छा वेतन और स्नेह देकर विश्वासी और वफादार बनाया हुआ है। खुद सिर्फ 3-4 घण्टे काम करते हैं, बाकी सब फोन से सम्भाल

लेते हैं। सुबह अष्टप्रकारी पूजा, व्याख्यान श्रवण, संघ-संस्था के कार्य, साधर्मिक - जीवदया - अनुकम्पा आदि कार्य करते हैं, और परिवार के साथ भी समय बिताते हैं।

इस दुकान में तो मुझे सिर्फ 3-4 घण्टे ही जाना होता है, तो क्यों न दूसरी दुकान भी खोल लूँ? या दूसरा धन्धा चालू कर लूँ? ऐसा लोभ न करके सन्तोषप्रद जीवन जी रहे हैं।

याद रखिए, कि धनवृद्धि के सुख से सन्तोष का सुख अनेक गुना अधिक होता है, अनेक गुना अच्छा होता है।

रोग होने के बाद दवा लेने से लाख बेहतर यही है कि रोग हो ही नहीं, आरोग्य का सुख ही अच्छा है। लोभ, आत्मा से लगा एक रोग है। धनप्राप्ति से मात्र चेहरे पर चमक आती है, लेकिन सन्तोष तो सच्चा आरोग्य है। इसके सुख की तो बात ही कुछ और है। जन्मजात रोगी तो इस सुख की कल्पना भी नहीं कर सकते।

धनप्राप्ति की दवाई एलोपेथी जैसी है, एक रोग ठीक तो दूसरा चालू, फिर उत्तरोत्तर डोज़ बढ़ाने पड़ते हैं। सन्तोष के मामले में एक बात समझने जैसी है, कि अधिक धन प्राप्त करने के लिए मेहनत की, लेकिन यदि पुण्य साथ न दे, तो सफलता नहीं मिल सकती। उस वक्त यदि यह सोचा कि जितना मिला, उतने में सन्तोष कर लेना है, यह वास्तविक सन्तोष नहीं है, यह तो ' Grapes are Sour '(अंगूर खट्टे हैं) वाली बात हुई। होना यह चाहिए, कि 'मेरे पास जो भी है, वह बहुत है, और अधिक नहीं चाहिए' - यह वास्तविक सन्तोष है।

प्रश्न : अधिक मिलने की क्षमता भी है, और सम्भावना भी, लेकिन फिर भी नया धन्धा न करें? भविष्य की भी तो चिन्ता करनी है न?

उत्तर : 3-4 घण्टे की मेहनत से यदि जरूरत से अधिक मिल रहा हो, साथ ही बचत करके 2-5-10 करोड़ की सम्पत्ति भी इकट्ठा कर ली, ऊपर से धन्धा तो चालू ही है, फिर भविष्य की कैसी चिन्ता?

प्रश्न : लेकिन यदि पापोदय से सारा पैसा एक साथ चला गया तो?

उत्तर : नया धन्धा किया, टेंशन लेकर शायद 50-100 करोड़ कमा लिए, फिर पापोदय से वे सारे पैसे चले गए तो? फिर क्या करेंगे?

100 करोड़ तो क्या, एक लाख करोड़ भी कम ही लगेंगे, मुकेश अम्बानी भी यही बात कहेगा। इसीलिए ऐसे पुण्यशाली जीवों के लिए कहा जाता है, कि 3-4 घण्टे में यदि अच्छी कमाई हो रही हो, तो बाकी का समय धर्म और सत्कार्यों में लगाना चाहिए।

अब कहिए, इसमें क्या अनुचित है? कौनसा ढोंग है। इससे आगे का जवाब आने वाले अंक में ...

आपके मन में भी जिज्ञासाभाव से कोई सवाल उठे, तो हमें 81810 36036 नंबर पर WhatsApp करें। उचित सवालों का उचित समय पर पू. गुरु भगवन्त द्वारा प्राप्त समाधान इस Faithbook नॉलेज बुक के **'प्रतिकार'** कॉलम में प्रकाशित किया जाएगा।

गम्मत के साथ ज्ञान

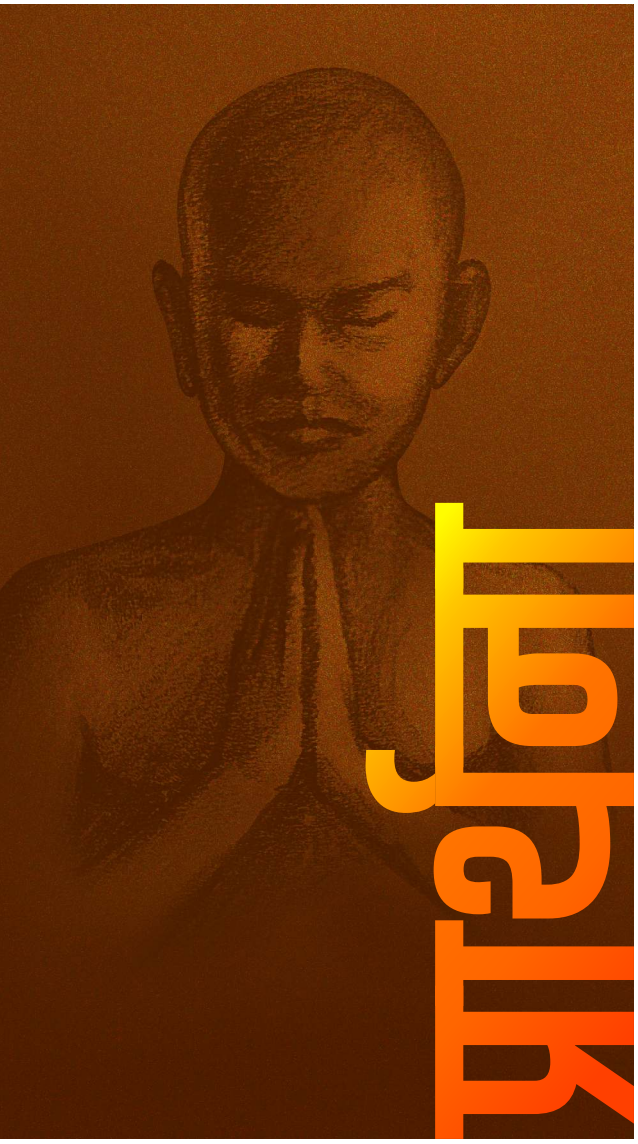

प्रार्थना

पूज्य आचार्य श्री अजितशेखर सूरीश्वरजी म.सा.

जैसे जिद पर उतरा बालक कुछ भी खाने को तैयार नहीं होता, किन्तु माता उसे खेल में, हंसी में बहला कर खाना खिलाकर ही दम लेती है।

इसी प्रकार मिथ्यात्व की जिद पर चढ़े जीव के मन-मस्तिष्क में प्रभु-वचनों को उतारने की जिनकी अद्भुत विशेषता है, उपरान्त जो प्रभावक प्रवचनकार, कवि एवं अनेक पुस्तकों के सृजक हैं, ऐसे आचार्य भगवन्त द्वारा शॉर्ट, स्वीट और स्माइलिंग लेखमाला वाचकों को प्रिय बनेगी, ऐसा अन्तर्मन से विश्वास है।

कहा जाता है, कि प्रवास के पूर्व एक बार प्रार्थना करनी चाहिए, युद्ध के पूर्व दो बार और विवाह के पूर्व तीन बार प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रवास के पहले की गई प्रार्थना से शुभ भाव प्रकट होते हैं, जिसके बल पर प्रवास निर्विघ्न सम्पन्न होता है। सामान्यतः प्रवास में खतरा कम होता है, इसलिए एक बार की प्रार्थना से भी काम बन जाता है।

युद्ध में खतरा अधिक होता है, इसलिए दो बार प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि सुरक्षा और सफलता मिले। युद्ध सामान्यतः कुछ दिनों में खत्म हो जाता है।

इससे भी अधिक खतरा विवाह में है, यह पूरी जिन्दगी चलता है, इसलिए तीन बार प्रार्थना करनी चाहिए ताकि आप पति के रूप में शान्ति से जीवन जी सकें, पिता के रूप में शान्ति से जीवन जी सकें, और अन्ततः पितामह के रूप में शान्ति से जीवन जी सकें। तीन बार प्रार्थना करने से पत्नी आपके साथ, सास-ससुर के साथ, देवर-जेठ आदि के साथ अच्छा व्यवहार करेगी।

मोक्षयात्रा सरल है, किन्तु मन से लिपटे दोषों को दूर करने के लिए युद्ध करना मुश्किल है। क्रोध को दूर करना कोई आसान कार्य थोड़े ही है? इसके लिए मन के कुरुक्षेत्र में युद्ध करना पड़ता है। शान्ति नामक सीता को संघर्ष और विवाद नामक रावण हरण करके ले गया है, इसलिए राम-रावण का युद्ध आवश्यक है। किन्तु इससे भी मुश्किल कार्य इच्छाओं के सन्तोष में, या मन में उठी इच्छाओं को शान्त करने में है। जो व्यक्ति इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने में, इच्छाओं को नियन्त्रित करने में सफल हो जाता है वही व्यक्ति दोषों के विरुद्ध युद्ध जीत कर सरलता से मोक्षयात्रा पूर्ण कर सकता है।

जैन महाभारत

मै भीष्म पितामह

पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरीश्वरजी म.सा.

जिनकी कलम से नित्य नए विषयों पर विचारों का उन्मेष होता रहा है, आमन्त्रण पत्रिका से लेकर पुस्तकों तक जिनकी रंगीन कलम एक खास विशेषता रखती है, ऐसे पू. आचार्य भगवन्त महाभारत की कथा की रसपूर्ण थाली आपके लिए लाए हैं। इनकी कथा वर्णन की शैली अत्यन्त अद्भुत है, और यह कॉलम अत्यन्त लोकप्रिय बनेगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है।

हमारे पास अनेक ऐतिहासिक प्रसंग और ग्रन्थ हैं, जो आज भी अत्यन्त उपयोगी हैं। महाभारत को हमारे देश का, विशेष रूप से हिन्दूत्व का धार्मिक और संस्कृतिक ग्रन्थ माना जाता है। इसमें ऐसे पात्र हैं, जो आज भी अमर हैं, इनमें से कुछ पात्रों की हम चर्चा करेंगे। इन सभी पात्रों से कुछ पॉजिटिव तो कुछ नेगेटिव सन्देश मिलता है। इनमें से कौनसा पात्र आपके हृदय के अधिक निकट है, आपके लिए एक विशेष आदर्श कौन है, यह आपको निश्चित करना है और हम भी आपको इस बारे में बताएँगे।

तो आइए, शुरु करें... **अथ श्री महाभारत कथा**

प्रस्तुत है भीष्म पितामह, कुरुवंश के आदरणीय वरिष्ठ महापुरुष। आइए सुनते हैं, इन्हीं की भाषा में, कि ये क्या कहते हैं:

श्री नेमिनाथ भगवान के शासन में हमारा राजवंश फला-फूला। अरे ! उनका ही परिवार कहो, तो भी चलेगा। पृथ्वी पर उनकी विद्यमानता में ही महाभारत का युद्ध हुआ था।

मेरे पिता का नाम शान्तनु, माता गंगा, और मैं उनका पुत्र गांगेय। हमारा राजवंश और खानदान आकाश की ऊँचाई छूता था। किन्तु सांसारिक मनुष्य में कोई दुर्बल कड़ी न हो, ऐसा भला होता है?

मेरी माता गंगा परम धार्मिक थी, पिता शान्तनु भी संस्कारी थे। किन्तु उनमें एक बड़ी बुराई थी, उन्हें शिकार का शौक नहीं, बल्कि व्यसन था। तीर-कमान लेकर वे सदैव तैयार ही रहते थे। शिकार, अर्थात् पंचेन्द्रिय प्राणियों की निर्दय हिंसा। संस्कारी कुल में ऐसी हिंसा सबको बिडम्बना में डालती थी, इसलिए मेरी माता गंगा इस नगर से दूर एक वन में महल बनाकर वहीं धर्मनिष्ठापूर्वक जीवन यापन कर रही थी। बहुत समय के बाद पिता को माता की याद सताई, इसलिए वे विनती करके उन्हें पुनः राजमहल लेकर आए। माता ने शर्त रखी कि शिकार को सम्पूर्ण तिलांजलि दो तो ही मैं अन्तःपुर में लौटूँगी, पिता ने शर्त मानी और माता का पुनः नगर और राजमहल में प्रवेश हुआ।

कुछ समय तक सब कुछ सही चला, किन्तु आखिर व्यसन किसे कहते हैं? प्रशमरति ग्रन्थ में उमास्वाति महाराज ने व्यसन की व्याख्या दी है, व्यसपति हितादिति व्यसनम्। जो आत्महित को धोखा दे, वह व्यसन है। कुछ समय बाद मेरे पिता फिर से उस क्रूर शिकार की लत में फंस गए। लत बहुत बुरी होती है, आदत जब लत बन जाए तो वह मनुष्य को लात मारती है। वर्तमान में 'कोरोना' किसकी देन है, सात व्यसनों में से एक, मांसाहार की ही तो। जो किसी की न माने, उसे कुदरत की बात माननी पड़ती है। नॉन-वेज क्यों खाना? हाथी, गेंडा, भैंस, हिप्पो, बैल आदि क्या मांसाहारी प्राणी हैं? नहीं! ये प्राणी भी वनस्पति से ही शक्ति प्राप्त करते हैं।

कोई भी व्यसन अच्छा नहीं होता। सिगरेट से लेकर शिकार तक, और व्हिस्की से लेकर वेश्या तक। जुआ, शराब, मांसाहार, चोरी, शिकार, वेश्यागमन और परस्त्री गमन, ये सात महाव्यसन हैं। व्यसन का एक अन्य अर्थ संकट भी है। मात्र एक व्यसन भी व्यक्ति को संकट में डाल सकता है। व्यसनी के घर एक बार जाकर देखकर आइए, कैसी रामायण चल रही होती। महाभारत के मूल में भी जुए का व्यसन ही था, जो आज भी सावन-भादों के महीनों में अधिक खेला जाता है। शेयर बाजार भी सट्टा या जुआ ही है।

महाभारत के मूल में युधिष्ठिर का जुआ है, तो युधिष्ठिर के प्रपितामह और मेरे पिता शान्तनु शिकार के शिकार बने। मेरी माता गंगा त्रस्त होकर पुनः वन के निवास में लौटी। उस समय तक मेरा जन्म हो चुका था। मेरे बाल्यकाल में छत पर चढ़कर आकाशमार्ग से गुजरते चारण मुनियों को बुलाकर मुझे पास बिठाकर उपदेश सुनती, मेरे बाल-मन पर उन सबका गहरा असर हुआ। उसमें भी अहिंसा एवं सदाचार (ब्रह्मचर्य) के उपदेश मेरे अन्तर्मन को स्पर्श कर गए। किसी भी आयु में कैसा भी परिवर्तन लाना हो तो श्रमण और श्रवण का सत्संग सतत रखना चाहिए। मुझे श्रमणों और उनके श्रवण का संग ठीक से लग चुका था।

एक बार फिर से ऐसी घटना हुई, कि मेरे पिता शान्तनु ने मुझे और मेरी माता को आग्रहपूर्वक

पुनः नगर में लाने के लिए माता से विनती की। किन्तु मेरी माता ने सविनय स्पष्ट मना कर दिया, और अपने जीवन के उत्तरार्ध को देव, गुरु एवं धर्म की शरण में बिताना निश्चित किया। किन्तु मुझे अपने पिता के साथ जाने का निर्देश दिया।

माता को छोड़ने का दुःख था, किन्तु उनकी आज्ञा से मैं सुखपूर्वक हस्तिनापुर रहने चला गया। शस्त्रविद्या आदि अनेक कलाओं में निपुण बना। मैं वय, गुण और कलाओं में आगे बढ़ने लगा। जिस प्रकार किशोरावस्था में मुझे मातृभक्ति का अवसर मिला, उसी प्रकार युवावस्था में पितृभक्ति का अवसर मिला।

"चेंज ऑफ़ लाइफ" फिर मेरे जीवन में महा-परिवर्तन का ऐसा समय आया, जिसने मुझे गांगेय से भीष्म बना दिया। हुआ ऐसा, कि मेरे पिता दिन-प्रतिदिन दुर्बल होते जा रहे थे। पड़ताल करने पर पता चला कि नदी किनारे भ्रमण करते हुए पिता किसी नाविक की पुत्री के प्रति आकर्षित हो चुके थे। उन्होंने नाविक के समक्ष अपना प्रस्ताव रखा, किन्तु नाविक-श्रेष्ठ ने उनकी माँग को अस्वीकार कर दिया। हमारे समय में राजा-महाराज प्रजा-वत्सल होते थे। अपने निजी सुख के लिए वे प्रजा पर बल-प्रयोग का स्वप्न में भी विचार नहीं करते थे।

मेरे पिता शान्तनु चाहते तो उस नाविक कन्या को बलात् अपने अन्तःपुर में ला सकते थे, किन्तु प्रमाणिकता, उत्तरदायित्त्व और सदाचार के संस्कार राजा और प्रजा की रग-रग में भरे थे।

मेरे पिता ने बल-प्रयोग नहीं किया, उल्टे स्वयं दुर्बल हो रहे थे। मैंने येन केन प्रकरेण यह बात जान ली, और मैं सीधे नाविक के पास पहुँचा। उसकी

सत्यवती नामक पुत्री रूपवती और सरस्वती थी। मैंने नाविक के समक्ष पिता के लिए प्रस्ताव रखा। नाविक चतुर था, उसने कहा, कि मेरी पुत्री का राजा शान्तनु के साथ विवाह करवा तो दूँ, किन्तु तुम ज्येष्ठ पुत्र हो, इसलिए राज सिंहासन पर तो तुम ही बैठोगे। मेरी पुत्री की सन्तान को तो राज्य नहीं मिलने वाला। नाविक की बात का मर्म समझकर मैंने उसी समय नाविक के सामने संकल्प किया, कि यदि यह बात है, तो मैं आजीवन राज्य सिंहासन का त्याग करता हूँ। यदि तुम अपनी पुत्री का विवाह मेरे पिता के साथ करो तो मैं कभी भी राजा नहीं बनूँगा।

मेरे माता-पिता ही मेरे भगवान थे, उनके लिए कोई भी बलिदान देने की मेरी तैयारी थी। नाविक मेरी बात सुनकर मुस्कुराया, किन्तु अभी भी वह अन्यमनस्क था। इसलिए उसने असन्तोष जताते हुए सत्यवती के लिए ना कही। तो मैंने पूछा, अब तुझे क्या चाहिए? तो नाविक बोला, तुम राजा नहीं बनोगे, ठीक है, किन्तु तुम्हारे विवाह के बाद तुम्हारी सन्तान को ही राज्य मिलेगा, मेरी पुत्री के सन्तान को नहीं। इसलिए मैं सत्यवती नहीं दूँगा। उसी समय मैंने एक क्षण भी समय गँवाए बिना भीष्म संकल्प किया और प्रतिज्ञा के रूप में नाविक को बताया। "हे नाविक श्रेष्ठ ! मैं आजीवन न राज्य लूँगा, न ही विवाह करूँगा। मैं आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा, जिससे मेरी सन्तान होने की सम्भावना ही नहीं रहेगी। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।"

मेरी ये दो भीष्म प्रतिज्ञाएँ सुनकर नाविक अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सत्यवती के विवाह के लिए सहर्ष तैयार हुआ। उस समय वहाँ आकाश में स्थित देवताओं ने मुझ पर पुष्पवृष्टि की, 'भीष्म-भीष्म' का नाद किया और मेरी प्रतिज्ञाओं की अनुमोदना की। अब तक मेरा नाम गांगेय था, बस उस समय से मैं भीष्म कहलाया।

यदि मनुष्य के पास सत्य और सत्त्व दोनों हो, तो देव भी दौड़े चले आते हैं, वे भी आप पर न्यौछावर हो जाते हैं। माता-पिता की प्रसन्नता के लिए सिंहासन और विवाह दोनों का त्याग किया। पूरे भारतवर्ष में मेरे जैसी पितृभक्ति करने वाले कुणाल जैसे कोई विरले ही होंगे।

मेरा एक ही सन्देश है, श्रीराम ने पिता के वचन स्वीकार करते हुए अयोध्या की गद्दी छोड़कर 14 वर्ष तक वनवास भोगा, पिता की प्रसन्नता के लिए मैं भी स्त्री और सत्ता छोड़ सकता हूँ, तो क्या आप अपने माता-पिता की छोटी-बड़ी प्रसन्नता के लिए छोटी-मोटी चीजें नहीं छोड़ सकते? कभी भोग-विलास, कभी सम्पत्ति, कभी समय तो कभी स्टेटस छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए। माता-पिता की गरिमा के सामने ये सब तुच्छ बातें हैं।

याद रखिए, कि आपके सांसारिक जीवन में आपके लिए आपके माता-पिता से बढ़कर और कुछ नहीं है। उनसे मिली खुशी और आशीष आपका पूरा जीवन आनन्द से भर देने में समर्थ है। मेरा प्रारम्भिक और पूर्वार्ध जीवन आपको एक ही सन्देश देता है, कि कुछ भी भुला देना, किन्तु माता-पिता को कभी मत भूलना। और माता-पिता का जीवन भी हमें एक सन्देश देता है, कि और कुछ छोड़ो या न छोड़ो, व्यसन अवश्य छोड़ना।

जिनशासन का जयघोष

पूज्य पंन्यास श्री प्रेमसुंदर विजयजी म.सा.

जैनत्व के संस्कारों से सुवासित प्रभु महावीर के अनुयायी सभी संघ, सभी सम्प्रदाय, सभी गच्छ, सभी समाज, सभी ट्रस्ट सामूहिक या व्यक्तिगत स्तर पर कोरोना Covid-19 की वर्तमान परिस्थिति में पंच-महाव्रतधारी श्रमण-श्रमणियों की भक्ति, सम्यक्दृष्टि पुण्यात्माओं की भक्ति, आवश्यकतानुसार अन्य लोगों को राहत-अनुकम्पा, जीवदया इत्यादि कार्यों में युद्ध स्तर पर तन, मन और धन से कार्यरत हैं। मैं उनकी हार्दिक अनुमोदना करता हूँ। आज जैन समाज करोड़ों रूपये पानी की तरह मानवसेवा और अन्य सत्कार्यों में सदुपयोग कर रहा है, सबको धन्यवाद है।

प्रभु वीर द्वारा जैनों की रग-रग में ऐसे उत्तम संस्कार भरे गए, इसलिए बारहों महीने ऐसे सत्कार्यों की गंगा बहती ही रहती है। किसी भी प्रकार की आपत्ति, उपद्रव, भूकम्प (कच्छ, लातूर), अतिवृष्टि (उत्तराखण्ड, बनासकाण्था, सूरत, मुम्बई), अनावृष्टि या महामारी जैसी विपत्तियों में मानवीय मूल्यों को उजागर करते हुए सत्कार्य करने में जैनों का विशेष योगदान सदैव रहता ही है।

वर्तमान समय में आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी, वर्द्धमान सेवा केन्द्र, जितो, मुम्बई जैन संगठन, विविध राज्यों के हजारों संघ, ट्रस्ट, संस्थाएँ, गौतम अडाणी और टोरंट जैसे उद्योगपति, जैन डॉक्टर, जैन सेवाकर्मी, जैन सेवा संस्थाएँ आदि ने अनेक प्रकार से इन सत्कार्यों में तन, मन और धन से सहयोग देकर करोड़ों - अरबों का सद्व्यय किया है, और कर रहे हैं।

साथ ही दूसरी ओर इस वर्तमान स्थिति में बिगड़ी अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों की नजर सरकारी नियमों के अनुसार धार्मिक ट्रस्टों द्वारा बैंक में रखे गए देवद्रव्य और ज्ञानद्रव्य आदि समस्त क्षेत्रों की राशि पर है। ऐसे समय में अपनी जेब से एक भी पैसा खर्च न करने वाले कुछ तथाकथित 'गरीबों के मसीहा' कहलाने वाले तथाकथिक समाज सेवक मात्र अपना उल्लू सीधा करने के लिए ऐसा लिखते हैं कि, 'बैंकों में धार्मिक संस्थाओं द्वारा करवाया गया पैसा FD के रूप में ऐसे ही पड़ा है, ये किसी के काम न आए, तो कैसे चलेगा?' 'जैनों के पैसे ज्यादातर तो मन्दिरों और पत्थरों पर ही अनावश्यक रूप से व्यय होते हैं।'

तो, ऐसे अवसर पर सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से सत्कार्य करने वाली सभी संस्थाओं, ट्रस्ट या संघ से अनुरोध है, कि आप कोई भी छोटा-बड़ा सत्कार्य कर रहे हैं, तो "भगवान महावीर के अनुयायी द्वारा" या "जैनधर्म के उपासकों द्वारा" या इस प्रकार के कोई Title द्वारा (TV या अन्य Media में) प्रचार करने में कमी न रखें। (किन्तु प्रचार वास्तविकता का ही करना है, बढ़ा-चढ़ाकर नहीं)

किसी व्यक्तिगत संस्था को इसकी Credit मिले, इससे बेहतर यह होगा कि समस्त जैनधर्म, समाज या भगवान महावीर का नाम लिया जाए। (सामने वाले का नाम और फोटो वगैरह न आए, यह भी ध्यान रखें) ताकि तथाकथित आधुनिक विचारधारा वाले जैन, अजैन या सरकार को भी पता चले कि जैन लोग सिर्फ मन्दिर, मूर्ति और पत्थरों पर खर्च नहीं करते, बल्कि अबोल जीवों से लेकर मानव मात्र की सहायता हेतु आगे आने वालों में, पैसे खर्च करने वालों में अग्रिम पंक्ति में आते हैं।

जैन आबादी भारत की जनसंख्या का आधा प्रतिशत भी नहीं है, फिर भी जैन धर्म के अनुयायी समस्त मानव समाज के लाभ के लिए संकट के समय करोड़ों की राशि का सद्व्यय करते हैं। इस बात का बार-बार अखबार या अन्य मीडिया प्रचार आवश्यक है, ताकि लोगों की झूठी और ईर्ष्याभरी मानसिकता में बदलाव आ सके और धार्मिक संस्थाओं की FD पर से सरकार की नजर हट सके।

समाचारों के अनुसार वर्तमान परिस्थिति में जैनों ने राहत कार्य में करोड़ों - अरबों का सद्व्यय किया है। इससे अन्य धर्मावलम्बीयों में जिनशासन के प्रति सच्ची प्रभावना, अहोभाव और आदरभाव बढ़ेगा।

प्रभु महावीर के केवलज्ञान का उत्सव, और शासन स्थापना पर्व के इस उत्सव से सबके हृदय में शासन की स्थापना हो, सब लोग जिनशासन को प्राप्त करके केवलज्ञान द्वारा अनन्त सुखी बनें, यही शुभेच्छा !!

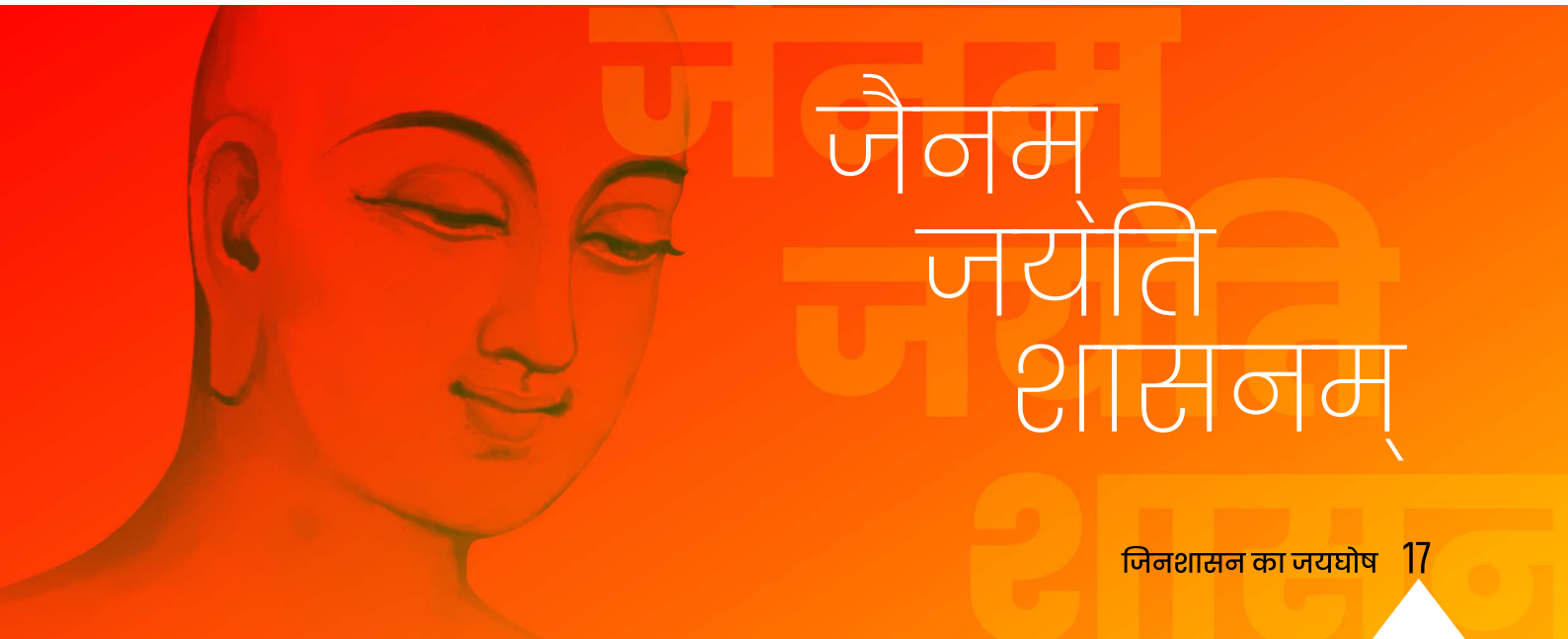

World Laughter Day

जो हंसता हैं उसका घर बसता हैं

विरल शाह

आज यह लेख लिखते हुए अत्यन्त आनन्द अनुभव हो रहा है, क्योंकि आज का लेख संजीवनी पर है। वो संजीवनी नहीं, जो हनुमान लक्ष्मण के लिए लेने गए, ये संजीवनी तो उससे भी विशिष्ट है। आपको शायद यह लगता होगा, कि ऐसी संजीवनी तो किसी ऊँचे पर्वत या दुर्गम स्थान पर मिलती होगी। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है, यह संजीवनी तो घर-घर में मिलती है। तो आइए, जानते हैं इस विशिष्ट संजीवनी के बारे में ...

कहते हैं, कि इस संजीवनी से अधिकतर रोग मिट जाते हैं। यह रोग होने के बाद उसे खत्म नहीं करती, बल्कि रोग ही ना हो, ऐसी जादुई असर दिखाती है। अधिकतर रोग टेंशन, चिन्ता और हताशा के कारण होते हैं। यह संजीवनी रोग पैदा करने वाले इस मूल को ही दूर फेंक देती है। और सबसे बड़ी बात यह है, कि यह संजीवनी बिलकुल मुफ्त मिलती है। यदि ऐसी संजीवनी मुफ्त मिलती हो, तो अब यह जानने की उत्सुकता अवश्य होती होगी कि आखिर यह संजीवनी क्या है? तो यह उत्तम संजीवनी है - हास्य। हास्य रूपी संजीवनी जितनी निर्दोष है, उतनी ही पावरफुल भी है।

हास्य की बात निकली है, तो गुजराती की वह कहावत याद आती है, कि 'हसता हैं उसका घर बसता हैं।' इस कहावत में हास्य से घर बसने तक की बात कह दी। क्यों ! है न कमाल की संजीवनी !! तो जिसका घर अब तक नहीं बसा, उसे आज से ही दिल खोलकर हँसना शुरु कर देना चाहिए, लेकिन ... घर बसने के बाद हँस पाएँगे कि नहीं, ये नहीं पता। इसीलिए आज की Smart Generation इस कहावत का Extension करते हुए कहती है, “हसता हैं, उसका घर बसता हैं, लेकिन बसने के बाद कौन हँसे?” और यह सवाल करने वाले ज्यादातर लोग विवाहित ही होते हैं।

ये तो हुई हँसी पर कुछ हल्की-फुल्की बात, और वास्तव में देखा जाए, तो हँसने के बहुत अधिक लाभ हैं। दर्द कम करना हो, रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ानी हो, Stress कम करना हो, और लम्बा जीवन जीना हो, तो हास्य मदद करता है।इसके आलावा

हास्य के अनेक प्रकार भी होते हैं, जैसे खिल-खिलाकर हँसना, अट्टहास्य करना, मूक हँसी, झूठी हँसी आदि। किन्तु इन सबमें उत्तम है, खुले दिल से खिल-खिलाकर हँसना। वास्तव में तो यह हास्य ईश्वर के वरदान के समान है, और अनेक स्थितियों में वरदान जैसा कार्य भी करता है। जैसे यदि कोई व्यक्ति आपसे जीत जाए, और आप नैसर्गिक रूप से हँसें तो उसकी जीत फीकी पड़ जाती है। किसी के गुस्से के सामने आप मीठी मुस्कुराहट बिखेरो, तो उसका गुस्सा ठण्डा पड़ जाता है। जब खुद को गुस्सा आए, उस समय भी यदि हास्य की technique अपनाई जाए तो न केवल खुद का गुस्सा छूमन्तर हो जाता है, बल्कि दूसरों के चेहरे पर भी हँसी आ जाती है।

मुन्नाभाई MBBS मूवी में डीन का किरदार जब भी गुस्से में होता, तब वह गुस्से को कंट्रोल करने के लिए हास्य की technique अपनाता। वह दृश्य देखकर हम भी हँस उठते हैं।

आज के 'वर्ल्ड लाफ्टर-डे' के अवसर पर एक और बात, यह हास्य और प्रसन्नता किसी सुख-सुविधा, साधन या अनुकूलता पर आधारित नहीं हैं। यदि ऐसा होता, तो अमीर लोग सबसे अधिक खुश होते, गरीब हमेशा रोते हुए ही मिलते लेकिन वास्तव में ऐसा देखने को नहीं मिलता इसीलिए सन्त, महात्मा, जैन मुनि और तपस्वी इतने त्याग और प्रतिकूलता के बीच भी मुख पर मुस्कान बिखेरे रहते हैं। कोई अमीर व्यक्ति अपनी AC लक्ज़री कार में भी टेंशन में होता है, तो उसी समय फुटपाथ पर बैठा फकीर, प्रभु भक्ति में मस्त होता है। तो आज 'वर्ल्ड लाफ्टर-डे' से प्रतिकूलता में भी हँसते रहने की कला हँसते-हँसते सीखें।

अन्त में हास्य की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि यह बिलकुल मुफ्त है। मुफ्त के साथ-साथ यह पूरी तरह से Tax-free भी है। इसीलिए तो फोटो खिंचवाते समय हम हँसते रहते हैं, इसलिए फोटो में हम अच्छे लगते हैं। यदि एक बार हँसने से फोटो अच्छा आ सकता है, तो रोज हँसने और हँसाते रहने से पूरा जीवन मजेदार और सुन्दर क्यों नहीं हो सकता?

तो इस श्रेष्ठ जड़ी-बूटी और वरदान के समान इस हास्य के लिए मुझे इतना ही कहना है, कि "लाख दुःखों की एक दवा है, क्यों न आजमाए ..." तो बस हँसते रहिए, हँसाते रहिए और जीवन को महकाते रहिए।

Next Sunday

मृगापुत्र कथा
पू. आचार्य श्री महाबोधि सूरिजी म.सा.

कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना
पू. मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

Mom@ Unconditional Love
पू. मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

नारी तू नारायणी
संजयभाई वखारिया

Must Read

You can read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit:

www.faithbook.in

to receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp Please Message us on

81810 36036

Follow, Like & Subscribe : FaithbookOnline

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

10th MAY 2020
Issue 01 • Part 02

MOTHER

Our Universe & University

HAPPY MOTHER'S DAY

HAPPY MOTHER'S DAY

करुणा
शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान

कृपा
पू. सिद्धांत महोदधि आचार्य श्री प्रेम सूरीश्वरजी महाराजा
पू. वर्धमान तपोनिधि आचार्य श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराजा
पू. सिद्धांत दिवाकर गच्छाधिपति गुरुमां श्री जयघोष सूरीश्वरजी महाराजा

आशीष
पू. प्रशांतमूर्ति गच्छाधिपति श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी महाराजा
पू. संघ शासन कौशल्याधार गुरुदेव आचार्य श्री जयसुंदर सूरीश्वरजी महाराजा

स्नेह
पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा.
पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक
शौर्य शांति ट्रस्ट

हृदय में हर्ष है

प्रणाम!

वीर विभु के केवलज्ञान कल्याणक से शुरु हुई इस ज्ञानयात्रा का सबने गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रथम Knowledge Book का सबने हृदय से स्वीकार किया, इस बात का हमें अन्तर्मन से अपार आनन्द है।

प्रथम Knowledge Book के लेखों से वाचक वर्ग अत्यन्त आश्चर्यचकित हुआ, और आने वाले अंकों की लेखमालाओं से भी वाचकों को आश्चर्य के साथ आनन्द प्राप्त होगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

इस Knowledge Book में करुणा और कोरोना, माँ और महावीर, श्रमणी और श्राविका के विषयों के बोधपूर्ण लेख दिए गए हैं।

आप स्वयं पढ़ें, दूसरों को पढ़ाएँ और सबको पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
आपके रचनात्मक सुझाव भी आमन्त्रित हैं।

- नरेन्द्र गाँधी, संकेत गाँधी

संपर्क सूत्र : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095
Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

आगमकथा

मृगापुत्र कथा

पूज्य आचार्य श्री महाबोधि सूरीश्वरजी म.सा.

जिनके प्रवचनों में लोगों को जकड़ कर रखने की क्षमता है। प्रसंगोचित प्रवचन करने की अद्भुत कुशलता है। और प्रवचन के साथ-साथ कलम चलाकर साहित्य का सृजन करके जिन्होंने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। ऐसे प्रवचन प्रभावक आचार्य भगवन्तने उपकार करते हुए श्री विपाक सूत्र आगम ग्रन्थ की कथा को हृदयस्पर्शी शब्दों में प्रस्तुत किया है। पाठको के लिए यह आगम कथा निश्चय ही हृदय के द्वार खोल देने वाली होगी, ऐसी श्रद्धा है।

कार्तिक अमावस की रात्रि के दो प्रहर बीत चुके थे, तीसरा आरा समाप्ति की कगार पर था, सोलह प्रहर से भी अधिक समय तक समवसरण में लगातार देशना देकर प्रभु ने विराम लिया तो मानो गंगा का प्रवाह थम सा गया, मानो मन्दिर में घण्टनाद रुक गया हो। प्रभु की अन्तिम देशना पूर्ण हुई। रत्न-सिंहासन से प्रभु उठे और समवसरण के तीन गढ़ उतर कर प्रभु राजा हस्तिपाल की शुल्कशाला में पधारे। प्रभु अपने ज्ञान से जानते थे, कि आज रात्रि पूर्ण होने से पूर्व मेरा मोक्ष होगा। गौतम स्वामी का अपने प्रति असीम स्नेह है यह भी प्रभु जानते थे, और यह स्नेह ही गौतम स्वामी के केवलज्ञान में बाधा डाल रहा है, इसलिए 'मुझे गौतम के इस स्नेह को तोड़ना चाहिए' ऐसा केवलज्ञान चक्षु से देख कर प्रभु ने गौतम स्वामी को निकट के गाँव भेजने का, अन्त समय में स्वयं से दूर भेजने का निर्णय लिया।

हस्तिपाल राजा की शुल्कशाला में प्रभु का आगमन : शुल्कशाला में प्रभु के समक्ष हजारों श्रमण विराजमान थे। गौतम स्वामी अग्रिम पंक्ति में बिराज रहे थे। अनन्त करुणासागर प्रभु ने गौतम स्वामी की ओर दृष्टि स्थिर करते हुए कहा, "गौतम ! (गोयमा !)" प्रभु के मुख से गौतम स्वामी को यह अन्तिम सम्बोधन था, यह सिर्फ शब्द नहीं, अपितु कोयल की मधुर कूज थी, यह सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि समुद्र की लहरों का संगीत था। प्रभु के श्रीमुख से अपने नाम का सम्बोधन सुनते ही गौतम स्वामी हर्षान्वित हो गए। विनयमूर्ति गौतम स्वामी का रोम-रोम नाचने लगा। दोनों हाथ जोड़कर, मस्तक झुकाते हुए वे प्रभु के चरणों में उपस्थित हुए। अत्यन्त मृदुस्वर में बोले, "भंते ! कृपा कीजिए ! आज्ञा कीजिए !" प्रभु बोले, "समीप के गाँव में देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता है, वह तुम्हारे द्वारा बोधि प्राप्त करेगा, अतः उसके कल्याण के लिए तुम्हें वहाँ जाना है।"

देवशर्मा को प्रतिबोध देने हेतु गौतम स्वामी की विदाई : "जैसी आपकी आज्ञा प्रभु ! आपने मुझ पर अनन्त कृपा की, मैं धन्य हुआ।" कहते हुए गौतम स्वामी शीश झुकाकर शुल्कशाला से बाहर निकले। चार ज्ञान के स्वामी गुरु गौतम को यह ध्यान भी नहीं रहा कि ये दर्शन अन्तिम दर्शन हैं। अब प्रभु का ऐसा तेजस्वी औदारिक देह पुनः देखने को नहीं मिलेगा। किन्तु प्रभु की आज्ञापालन के अतिरिक्त गौतम स्वामी को और कुछ दिखाई नहीं देता। अस्सी वर्ष के गौतम स्वामी अट्ठाईस वर्ष के युवक जैसी फुर्ती दिखाते हुए देवशर्मा को प्रतिबोध देने हेतु और प्रभु-वचन को सार्थक करने हेतु

अपापापुरी से बाहर निकल पड़े।

कार्तिक अमावस्या का तीसरा प्रहर पूर्ण हुआ। चतुर्थ प्रहर शुरु हुआ, उस समय स्वाति नक्षत्र में चन्द्र का योग था। प्रभु को चौविहार छठ का तप था, जो उनका अन्तिम तप था। प्रभु की साधना का प्रारम्भ भी छठ से हुआ, और पूर्णाहुति भी छठ से हुई। प्रभु ने सोलह प्रहर की देशना अभी-अभी पूर्ण की ही थी। तीर्थंकर नामकर्म के कारण प्रभु के मुख पर खेद या ग्लानि का तनिक मात्र भी अंश दिखाई नहीं दे रहा था। सूर्यमुखी के फूल की भाँति प्रभु का शरीर अत्यन्त स्वस्थ था, प्रभु के मुख पर सौम्यता एवं प्रसन्नता थी। आयुष्य पूर्ण होने में बस कुछ ही समय बाकी था। सुधर्मा स्वामी आदि हजारों श्रमण, चन्दना आदि अनेक श्रमणियाँ, काशी तथा कौशल देश के लिच्छवी जाति के नौ राजा, तथा मल्लिक जाति के नौ राजा, इस प्रकार अठारह गणराज्यों के राजा तथा अनेक श्रावक एवं श्राविकाएँ प्रभु के सम्मुख उपस्थित थे। ये अठारह राजा चेटक (चेड़ा) राजा के सामन्त थे। अमावस के दिन वे सभी उपवास के साथ पौषध में थे।

प्रभु की धर्म-देशना का पुनर्प्रारम्भ : समवसरण में विराम को प्राप्त प्रभु की वाणी का प्रवाह फिर से बहने लगा। प्रभु की इस धर्म-देशना का मुख्य विषय था - 'विपाक'। विपाक का अर्थ है 'फल', विपाक अर्थात् शुभाशुभ कर्म परिणाम, विपाक अर्थात् पुण्य एवं पाप कर्मों का फल। जो आत्मा पाप करती है, उसे दुःख प्राप्त होते हैं, और जो आत्मा पुण्य करती है, उसे सुख प्राप्त होते हैं। या फिर, कर्म के फल के रूप में अनुकूलता प्राप्त हो, तो यह पुण्य का परिणाम है, और प्रतिकूल अनुभव पाप का परिणाम है।

पाप विपाक अध्ययन : यह सदैव ध्यान देने योग्य है, कि जीव ने जो भी कर्म बाँधे हैं, उनका फल उसे इसी जन्म या अगले जन्मों में भोगना ही पड़ता है। अनन्तज्ञानियों का वचन है, "कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि।" अर्थात् किए हुए कर्मों का फल भोगे बिना आत्मा की मुक्ति सम्भव नहीं है।

समान्यतः सुख सबको प्रिय होता है और दुःख कोई नहीं चाहता। जिसे दुःख नहीं चाहिए उसे पापाचरण नहीं करना अतः इसलिए अन्याय, अत्याचार, वेश्यागमन, प्रजा-पीड़न, रिश्वतखोरी, पंचेन्द्रिय की हिंसा, निरपराधी पशुओं को प्रताड़ना, मद्यपान, कषाय, स्वार्थवृत्ति, भोग-आसक्ति, यज्ञ, मांस-भक्षण, निर्दयता, चोरी, कामवासना आदि अधम कृत्यों का त्याग करना आवश्यक है। जो व्यक्ति ऐसे अधम कार्य करता है, वह घोर कर्म बाँधता है, फलस्वरुप नरक आदि दुर्गति में उत्पन्न होकर भारी दुःख सहन करता है। यहाँ मृगापुत्र का दृष्टान्त प्रसिद्ध है। ऐसा कहकर प्रभु ने पापविपाक के 55 अध्ययनों की प्ररूपणा प्रारम्भ की।

मृगापुत्र

प्रभु ने मृगापुत्र का दृष्टान्त विस्तार से बताना शुरु किया। इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मृगाग्राम नामक एक नगर था, वहाँ विजय नामक क्षत्रिय राजा राज्य करता था। उसकी पत्नी का नाम मृगा था। वह अत्यन्त रूपवती स्त्री थी। सांसारिक सुख भोगते हुए उन्हें एक पुत्र हुआ, जिसका नाम रखा गया - मृगापुत्र।

पूर्वकृत कर्मों के उदय के कारण मृगापुत्र जन्म से ही अन्धा, गूंगा, बहरा, लूला और जुगुप्सनीय विचित्र आकृति वाला था। उसके शरीर का एक भी अंग ठीक नहीं था। उसके शरीर में हाथ-पैर, आँख, नाक, कान आदि थे ही नहीं। उन अंगों के स्थान पर उनका चिह्न कहा जा सके, सिर्फ ऐसी आकृति थी, वह भी बिना ठिकाने की थी। उसकी आँख, नाक और कान के छिद्रों और हृदय से जुड़ी नाड़ियों में से बार-बार रक्त और मवाद निकलता था, उपरान्त उसे वायु

रोग भी था। माता मृगादेवी उस बालक को गुप्त स्थान पर रखकर उसको भोजन आदि देकर उसका पालन करती थी।

उसी नगर में एक जन्माँध व्यक्ति रहता था और एक अन्य दृष्टिवान व्यक्ति उसकी सहायता करता था। यह अन्धा व्यक्ति शरीर से अत्यन्त मैला और दुर्गन्ध वाला था, उसके चारों ओर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती थी। यह व्यक्ति मृगाग्राम में घर-घर भीख माँगकर अपना जीवन यापन करता था। एक बार इस नगर में मेरे पगलिए हुए, नगर के बाहर समवसरण की रचना हुई थी। राजा विजय अपने विशाल परिवार के साथ धर्मदेशना सुनने के लिए निकला। हजारों लोगों की चहल-पहल के कारण उस अन्धे व्यक्ति ने अपने सहायक से पूछा, "आज नगर में बड़ा उत्सव लगता है, अन्यथा इतनी चहल-पहल नहीं होती।" तो उसके सहायक ने कहा, "हाँ ! आज श्रमण भगवान महावीर हमारे नगर में पधारे हैं, उनके दर्शन-वन्दन के लिए सब लोग जा रहे हैं" यह सुनकर उस अन्धे व्यक्ति ने कहा, "चलो ! हम भी प्रभु के पास चलते हैं।" दोनों समवसरण में पहुँचे, तीन प्रदक्षिणा दी, वन्दन और नमस्कार किया। तत्पश्चात् पूरी सभा ने धर्मश्रवण किया, और अन्त में सब यथास्थान चले गए।

समवसरण में जन्माँध व्यक्ति को देखकर गौतम ने मुझसे प्रश्न किया, "भगवन् क्या ऐसे भी लोग होते हैं, जो जन्म से अन्धे हो?" मैंने कहा, "हाँ

गौतम ! ऐसे लोग होते हैं, और ऐसा एक व्यक्ति इसी नगर में है। इस नगर के राजा विजय और रानी मृगादेवी का पुत्र जन्म से अन्धा है, और उसका कोई भी अंग प्रमाणयुक्त नहीं है। रानी मृगादेवी गुप्तरूप से उसका पालन कर रही है।" यह सुनकर गौतम मेरी अनुमति से मृगापुत्र को देखने के लिए उसके घर गए। प्रथम गणधर गौतम स्वामी को साक्षात् देखकर मृगादेवी अत्यन्त आनन्दित हुई। वह हाथ जोड़कर बोली, "भगवन्त ! आप अभी यहाँ किस प्रयोजन से आए ?" गौतम ने कहा, "देवानुप्रिये ! मैं तुम्हारे पुत्र को देखने के लिए आया हूँ।" यह सुनकर मृगादेवी, मृगापुत्र के बाद उत्पन्न हुए अपने चार पुत्रों को सुन्दर वस्त्र-अलंकार पहनाकर गौतम के पास लेकर गई, और बोली, "ये चारों मेरे पुत्र हैं, आप देख लीजिए।" तो गौतम बोले, "मृगादेवी ! मैं इन्हें नहीं, तुम्हारे ज्येष्ठ पुत्र को देखने के लिए आया हूँ, जो जन्म से अन्धा है और जिसे तुमने तलखाने में छिपाकर रखा है।"

यह सुनकर मृगादेवी आश्चर्य से बोली, "भगवन्त ! आपको इस गुप्त रहस्य की जानकारी कैसे हुई?" तो गौतम बोले, "मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर ने मुझे बताया।"

जब यह संवाद चल रहा था, उस समय मृगापुत्र के भोजन का समय हो गया था, अतः मृगा रानी ने गौतम से कहा, "प्रभु ! आप यहीं रहिए, मैं अभी मेरे ज्येष्ठ पुत्र के दर्शन आपको करवाती हूँ।"

यह कहकर रानी वस्त्र परिवर्तन करके भोजनशाला में गई, वहाँ छोटी बैलगाड़ी के आकार की गाड़ी में विपुल मात्रा में अनेक प्रकार के भोजन के बर्तन लिए और गाड़ी खींचते हुए गौतमस्वामी के पास आई, और बोली, "प्रभु आप मेरे साथ चलिए।"

दोनों तलगृह में पहुँचे, रानी ने अपना मुख चार परत वाले वस्त्र से ढका, और गौतम स्वामी को भी अपना मुख ढकने की विनती की। गौतम स्वामी ने भी मुँहपत्ती बाँधी। तलभँवरे का कक्ष निकट आते ही मृगा रानी ने मुँह उल्टा करके कक्ष का द्वार खोला। द्वार खुलते ही जोर से दुर्गन्ध आई। कैसी दुर्गन्ध थी? कोई गाय, भैंस, बिल्ली, कुत्ता, चूहा, हाथी, घोडा, शेर, बाघ, बकरे आदि की सड़ी-गली लाश, जिसमें असंख्य कीड़े सड़ रहे हों, जो अत्यन्त अशुचिमय और विकृत हो, दिखने में जो अत्यन्त जुगुप्सनीय हो, ऐसी दुर्गन्ध से भी अनेक गुना अनिष्ट, अमनोहर, अप्रिय और अमनोज्ञ दुर्गन्ध थी।

रानी मृगा ने साथ लाया हुआ भोजन अपने पुत्र को खिलाया। उसे जन्म से ही भस्मक रोग था, इसलिए भोजन उदर में जाते ही तुरन्त पच गया, और वह रक्त और मज्जा में परिवर्तित हो गया। फिर तुरन्त ही उसे उस रक्त और मवाद का वमन भी हो गया, और इतना ही नहीं, वह अपने ही वमन को खुद चाट गया।

यह देखकर गौतम को विचार आया, "अहो! यह जीव पूर्व जन्मों के कैसे घोर पापों का फल इस भव में भुगत रहा है। नरक और नारकी जीवों को तो मैंने नहीं देखा, किन्तु इस मृगापुत्र की वेदना सच में नरक की वेदना याद दिला रही है।" तत्पश्चात् गौतम मृगा रानी से अनुमति लेकर वहाँ से निकले, और मेरे पास आए, वन्दन करके मुझसे पूछा, "प्रभु ! पिछले भव में इस बच्चे ने कौनसे ऐसे कर्म बाँधे, कि इस भव में वह ऐसे घोर दुःख भुगत रहा है?"
मैंने गौतम को मृगापुत्र के पूर्वभव की बात कही।

Vibrant Current

कही पे निगाहें, कही पे निशाना

मुनि श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

जिनशासन के जोश और जुनून के साथ जिनकी कलम चलती है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शासन और सत्य क्या है, इसकी जानकारी देने वाली लेखमाला पू. युवामुनि द्वारा लेखांकित हो रही है. धारदार, असरदार और कटार लेखक निश्चय ही नया दृष्टिकोण देंगे और सबको मनोमंथन के लिए विवश करेंगे.

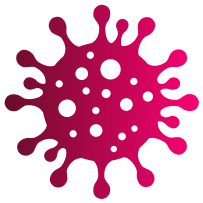

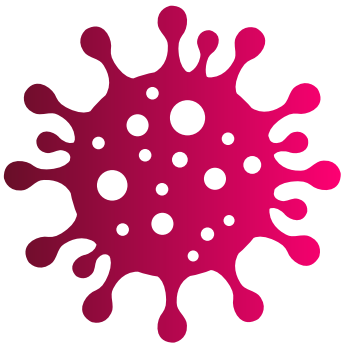

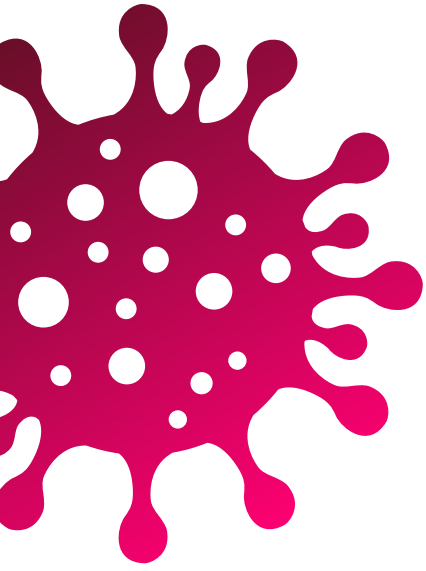

एक मेडिकल स्टोर पर बड़ा बोर्ड लगाया गया था, यदि लाभ न हो तो दवाई के पैसे वापिस दिए जाएंगे...।

किसी ने वहां से दवाई खरीदी थी। 4 दिन के बाद वह आदमी पैसे वापिस लेने आया तो मेडिकल स्टोर वाले ने पुनः बोर्ड पढ़ने का अनुरोध किया। आदमी ने पढ़कर कहा, आप लाभ की निश्चित गारंटी दे रहे हो, लेकिन मुझे तो इस दवाई से कोई लाभ नही हुआ है।

स्टोर के मालिक ने कहा, मगर मुझे तो हुआ ना? मैंने यह गारंटी आपको दी ही नही है कि आपको अवश्य लाभ होगा ही होगा।यय

मै इस चुटकुले को आज के समय मे वास्तविकता में तब्दील होता देख रहा हूं। पूरे विश्व में कोरोना का कहर, कोरोना की हाय-तौबा मची हुई है। ऐसे वक्त में मैं आपके सामने कोरोना की अंदर की बातें बताने आया हूं।

एक विज्ञापन आप सभी ने शायद देखा होगा 'दाग भी अच्छे हैं'। सर्फ एक्सेल का यह विज्ञापन सिद्ध कर रहा है कि आपके कपड़े गंदे हों तो अच्छा ही है (हमारे लिए)। ठीक उसी प्रकार कुछ चंद पूंजीपतियों की मलिन मनसिकता 'रोग भी अच्छे हैं' की बनी हुई है। कैसे? आइये जानते हैं चंद शब्दों में...

पूर्व के काल में इतिहास ऐसे सज्जनश्रेष्ठ वैद्यराज की गवाही दे रहा है जो अपने पास आए मरीजों को स्वस्थ किए

बिना शुल्क नही लेते थे। जो मरीज़ अपनी चिकित्सा से ठीक ना हो और मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो उसके परिवार से एक पैसा भी लेना पाप मानते थे (झंडु वैद्य)। कई बार तो चिकित्सा निःशुल्क करते थे। उनके बाद आए कुछ वैद्यराज असाध्य कक्षा के रोगी को पहले ही मना कर देते या फिर जो मरीज़ उनका परहेज पालने में सक्षम ना हो, उसे द्वार से ही विदा कर देते, ताकि प्रकृति का विश्वासघात ना हो और घर आया मरीज़ झूठे विश्वास में ना रहे।

तत्पश्चात् आये डॉक्टरी युग में दया, मानवता और सेवा के उद्देश्य से डॉक्टर बनने वालों में से कई सारे ऐसे निकले जो अपना अध्ययन खर्च वसूल करने के लिए मरीज़ से पैसे लेने लगे। मरीज़ अच्छा हो या ना हो पैसे लेना अनिवार्य...।

आगे के काल में रोग हो या ना हो, टेस्टिंग के पैसे लेने शुरू हो गए। अनावश्यक टेस्टिंग के लिए कुछ लैब से सेटिंग्स और अनावश्यक दवाई देने के लिए कुछ फार्मा कंपनियों से कमिशन का दौर चला।

आगे के टाईम में पूर्ण रूप से मेडिकल सेवा, सेवा न रहते हुए बड़ा धंधा बन गया। Everything is fair in love and war इस कहावत में और एक शब्द जुड़ गया and business. गंदा है, मगर धंधा है और धंधे में सबकुछ जायज है। रोग ना हो तो भी रोग का डर दिखाकर पैसे बनाने वाले इस लाइन में धीरे-धीरे बढ़ने लगे।

अब वर्तमान में यह स्थिति बन चुकी है कि कुछ अति उत्कृष्ट अधमाधम मानसिकता वाले लोगों ने रोग ना हो तो रोग इंसान के शरीर में डालकर, उसके शरीर को डैमेज करके अपने उत्पाद बेचने का प्रारंभ किया है।

जिस वुहान लैब से वायरस लीक हुआ, वह लैब ऑफिशियली जैविक शस्त्र (Biological Weapons) निर्माण करने का कार्य कर रही थी। चाइना की उस लैब को अमरीका विगत दस सालों से करोड़ों डॉलर की फंडिंग कर रहा था। गुप्त षड़यंत्र के तहत इस वायरस को पूरी दुनिया में फैलाया गया, वो भी जानबूझकर...। नाम चमगादड़ का दिया गया, मगर चमगादड़ का मार्केट बंद नही किया गया। सीफुड मार्केट को दिखावे के लिए थोड़े दिनों के लिए बंद किया गया।

हमारे पास इसके पुख्ता सबूत हैं कि कोरोना कोई महामारी नही, महा भेजामारी साबित होने वाली है। कोई भी प्राकृतिक वायरस कभी भी इतना बड़ा क्षेत्र कवर नही कर सकता, क्योंकि हरेक देश का प्राकृतिक तापमान भिन्न-भिन्न होता है। ऐसा नोबेल पुरस्कार विजेता जापान के वैज्ञानिक भी कह रहे हैं।

इस कोरोना को महामारी सिद्ध करने के लिए जी-जान से मीडिया लगा हुआ है, ठीक उसके सामने इसे सामान्य बीमारी बताने के लिए, सबूतों के साथ सिद्ध करने के लिए कुछ व्हीसल ब्लोअर

(समाज को जागृत करने वाले हितचिंतक) भी लगे हुए हैं अनवरत प्रयास में।

क्यों कुछ लोग इसे सामान्य बीमारी मान रहे हैं, उसके तथ्यों को पहले हम देखेंगे।

आप कहेंगे कि यदि यह कोरोना महामारी नही है तो अमरीका-इटली में इतने लोग क्यों मर रहे हैं? इसका जवाब है कि 22 अप्रैल का लेटेस्ट रिपोर्ट देखें तो अमरीका में 7.61 लाख कोरोना के पॉजिटिव मरीज़ और 40000 करीब मौतें। मगर... हर साल अमरीका में फ्लू से मरने वाले 60 से 80 हजार नॉर्मल हैं और 8 लाख के लगभग मरीज़ अस्पताल में आते ही हैं, सिर्फ फ्लू का नाम बदलकर कोरोना कर दिया गया है। 16 अप्रैल के टाइम्स ऑफ इंडिया में WHO ने खुद स्वीकार किया है कि यह कोरोना ILI (इन्फ्लूएंजा लाइक इलनेस) जैसी सामान्य बीमारी है, जिसमें 1000 में से 1 की मौत होती है।

और आश्चर्य की बात करुं तो अमरीका में डॉक्टरों को विशेष पुरस्कार (प्रलोभन) देकर एक कपटलीला को अंजाम दिया जा रहा है। किसी अन्य रोग से मरे लोगों को भी कोरोना से मरे दिखाया जा रहा है। अरे! दूसरे रोगों का बना हुआ डेथ सर्टिफिकेट (मृत्यु प्रमाणपत्र) भी परिवर्तित किया जा रहा है और जिसका टेस्ट भी न हुआ हो ऐसे अमरीकन की मृत्यु कोरोना से हुई, ऐसा बताया जा रहा है (विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी...)।

(स्वास्थ्य विभाग) इटली की ऑफिशियल वेबसाइट में लिखे आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलेगा कि 22/25 हजार मौतों में सिर्फ 1200 की मौत कोरोना से हुई है। उनमें भी कोरोना के साथ मरे या कोरोना के कारण मरे, उसकी जांच होनी बाकी है, क्योंकि कोरोना ग्रस्त मरीज़ का पोस्टमार्टम ही नही किया जा रहा है।

यह इसलिए भी सामान्य बीमारी है, क्योंकि इससे ग्रस्त लोगों में से 80 प्रतिशत बिना दवाई के अच्छे हो रहे हैं। जो 20 प्रतिशत हैं उनमें से भी 15 प्रतिशत सामान्य दवाई से और जो मर रहे हैं, उनकी उम्र 60 से 70 वर्ष के ऊपर की होने के साथ अन्य अनेक गंभीर बीमारी भी कारण हैं।

इतनी बड़ी तादाद कोरोना पॉज़िटिव आने में एक कारण टेस्टिंग भी है, जिन्हें उसके बारे में विशेष जानकारी चाहिए वे मेरा बड़ा लेख पढ़ने का कष्ट करें। जिन्हें कोरोना के बिल्कुल भी लक्षण नहीं हैं, उन्हें भी इस चमत्कारी किट से कोरोना ग्रस्त बताया जा रहा है।

जो एक जमाने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (थकज) के नेशनल प्रोग्राम ऑफिसर रहे थे और जिन्होंने भारत के सरकारी आरोग्य विभाग में भी अपनी सेवाएं प्रदान की हैं, वो डॉ. देवदासन बता रहे हैं कि भारत में कोरोना से डरने की बिल्कुल जरूरत नही है, क्योंकि भारत में लोग गंदगी में जीने के आदी हैं, अतः उनके शरीर में कोरोना से लड़ने की विशेष क्षमता विकसित है।

वेल्लोर के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज के डॉ. जय भट्टाचार्य जी बहुत ही महत्वपूर्ण बात बता रहे हैं स्वीडन-जापान जैसे देशों ने कोरोना पर नियंत्रण लॉकडाउन नही रखने से पाया। भीड़ में रहने वाले लोगों की इम्युन सिस्टम भीड़ से ही मजबूत हो जाती है, जिसे Herd (हर्ड) इम्युनिटी कहते हैं।

अब दूसरा एंगल भी देख लेते हैं। यदि कोरोना को महामारी मान भी लें तो उससे फायदा किसको होने वाला है? आपने कुछ गुंडे लोगों की नीति (?) देखी होगी। 3-4 गुंडे किसी लड़की की छेड़खानी करने लगते हैं और एक खलनायक उस लड़की को अपनी जान की बाजी लगाकर बचा लेता है और बाकी लोगों को भगा देता है। भोली-

भाली लड़की उस महा खलनायक को अपना जिस्म सौंप देती है और सब कुछ लुट जाने के बाद पछतावा करती है।

व्यापार पत्रिका द इकॉनोमिस्ट के जनवरी माह के मुखपृष्ठ पर कुछ सांकेतिक शब्दों में गुप्त संदेश छिपा हुआ है। कुछ प्रबुद्ध सज्जनों ने उसका राज़ जानना चाहा तो चौंक गए। इकॉनोमी को ध्वस्त करने की बू उस कवर पेज से आ रही थी।

डिजिटल करन्सी बिटकॉइन, N e o , Ripple, Eutherium इत्यादि को लॉन्च करने की मानसिकता से रिसेशन लाया गया है। कुछ लोग कह रहे हैं कि लॉकडाउन हटने के बाद कई धनपति कंगाल हो जाएंगे, मैं कह रहा हूं कि धनपति कुछ लोग ही नही, विश्व के कई देश भी बर्बाद हो जाएंगे। कुछ महिने पहले ही सुप्रीम कोर्ट (भारत) ने डिजिटल करन्सी को वैधता दे दी है।

New World Order के अपने विचार को समस्त विश्व में लागू करने के लिए चंद लोगों के द्वारा पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था तहस-नहस करने की योजना के साथ ही विश्व की अधिकांश फालतू (Useless) आबादी को कम करने की भी प्लानिंग कब की बनाई जा चुकी है।

हम इसे मानें या न मानें, कोरोना का डर मीडिया के द्वारा फैलाने में वो ही कुछ लोग हैं, जो लोग पूर्व में HIV(एड्स) का डर फैलाकर यौन शिक्षा (Sex Education) लाना चाहते थे। आज कोरोना का डर फैलाकर अपनी वैक्सिन बेचना चाहते हैं।

लेख लंबा ना हो जाये इसलिए यहां पर सबूत प्रस्तुत नही कर रहा हूं, मगर जिन्हें अधिक जानकारी चाहिए वे हमारा संपर्क जरूर कर सकते हैं।

कोरोना के गुंडे से डरने वाले वैक्सिन के गुंडों के हाथों में ना फंस जाएं, ऐसी प्रभु से प्रार्थना... मगर, हमारे धैर्य की परीक्षा में हमें सफल होना कितना जरूरी है, यह आखिरी दृष्टांत से समझने की कोशिश कीजिए।

12 साल तक वैशाली में बंद लोगों के धीरज ने जब जवाब दे दिया तब कूलवालक जैसे भ्रष्ट साधु को भी इसका उपाय पूछा गया... और इलाज के रूप में जो बताया गया वो रोग से भी कई गुना ज्यादा खतरनाक था। 40 दिन के लॉकडाउन से त्रस्त लोग WHO से इलाज पूछेंगे तो शायद जवाब मिलेगा वैक्सिन..., जो कोरोना से भी ज्यादा खतरनाक होगा...।

रोग से ज्यादा खतरनाक रोग का उपाय नही होना चाहिए। कोरोना से ज्यादा खतरनाक उसके लिए सूचित उपाय हैं। वो कौन-कौन से उपाय हैं और कैसे ज्यादा खतरनाक हैं...? यह लेकर अगले महिने फिर से मिलेंगे... (क्रमशः)

Happy Mother's Day

Mom@Unconditional Love

पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

जिनके प्रवचन और शिविरों में भाग लेने के लिए युवावर्ग दौड़ा चला आता है, साथ काव्य सृजन और लेखन में जिनकी लेखनी सुप्रसिद्ध है, ऐसे मुनिवर के विविध लेख युवाओं की पहली पसन्द बनेंगे, ऐसी श्रद्धा है।

सृजनहार का सर्वोत्कृष्ट सृजन है - माँ। वात्सल्यमूर्ति माँ के प्रेम की चाहत तो जगत के नाथ को भी होती है। श्री पार्श्वनाथ भगवान भी पूर्वभव में देवलोक से पृथ्वीलोक पर माता का मुख देखने के लिए आए थे। जिस माता की कुक्षी से वे जन्म लेने वाले थे, उनका मुखड़ा देखकर वे अत्यन्त आनन्दित हुए।

माँ का प्यार किसे प्रिय नहीं होता? अरे ! माता को प्रत्यक्ष देखकर ही नहीं, बल्कि माता का चेहरा याद भी आ जाए, तो भी एक अलग ही Feeling आती है। माता के पेट में हमने नौ-नौ महीने गुजारे हैं ना ! अरे यार ! हमें वे दिन जरा भी याद नहीं आते, नहीं तो हमें पता चलता कि उस वक्त को हमने कैसे बिताया? उन नौ महीनों में हमने माता के पेट में क्या-क्या किया? कितनी लातें मारी? उसे कितना परेशान किया? उसे कितना दर्द दिया? लेकिन मम्मी ने क्या किया? सब कुछ सहन किया, और वह भी with love.

फिर एक दिन हमारा जन्म हुआ। लेकिन हमने मम्मी को सताना बन्द नहीं किया। बार-बार रोना, कपड़े खराब करना, रात-रात भर जगाना, पूरी रात उनसे लोरी सुनना, वो झूला झुलाना थोड़ी देर भी बन्द करे, कि जोर से चिल्लाकर रोना, वगैरा...वगैरा...

थोड़े बड़े हो जाने के बाद हमारी सताने की style बदल गई। सुबह उठने में हमें आलस आता था, please two minutes, please two minutes करते रहते थे और मम्मी की गोद में सर रख कर सो जाते थे और फिर जब दस मिनिट बाद भी हमारी दो मिनिट पूरी नहीं होती, तब वो हमें उठाकर

सीधे बाथरुम में ले जाती और पानी डालकर हमारी finally नीन्द उड़ा देती थी।

जब हम नहाकर बाहर आते, तब तक तो हमारे लिए गर्मागर्म दूध तैयार ही होता था। लेकिन हमको दूध नहीं भाता, इसलिए घर में जितनेकमरे होते है वो सभी कमरे की मम्मी को यात्रा करा कर और मम्मी को अपने पीछे भगा-भगा कर फिर last में मुँह बिगाड़ कर हम दूध पीते थे। इतना परेशान करने पर भी, मानो अभी भी बहुत कुछ बाकी हो, तो खाने में हम सौ नखरे करते थे। मम्मी यदि भिण्डी की सब्जी बनाए तो मानो festival हो ऐसी खुशी, और टिण्डे की सब्जी बनाए तो शोकसभा में बैठे हों, ऐसा मुंह बना लेते थे। ऊपर से मम्मी से कोई न कोई फरमाईश करते रहना, सो अलग। जैसे कि, " मेरे लिए भेल बनाओ, डोसा बनाओ, वेफर बनाओ " आदि और यदि मम्मी ये सब बना भी दे और कल को हमें वो चीज न भाए, तो शिकायत करने में हम संकोच नहीं करते और मुँह पर बोल देते थे, कि " तेरे को तो बनाना ही नहीं आता। "

फरमाईश और शिकायत - ये दोनों चीजें जहाँ हक से कर सकते हैं, ऐसा एक ही address है, वो है - माँ।

एक राज़ की बात कहूँ? Normal days में हमें मम्मी के हाथ का खाना बोरिंग लगता है, लेकिन जब Hostel या Job के लिए कुछ दिन out of station रहना पड़ता है तब मम्मी की याद इस बात के लिए जरूर आती है, कि चिवड़ा तो मम्मी के हाथ का ही अच्छा लगता है, दाल तो मम्मी के अलावा किसी और की गले से ही नहीं उतरती।

और फिर School time की बात करें, तो ...यदि मम्मी नहीं होती, तो हमारी पढाई भी Difficult हो जाती। रात को जागकर हमारा Home work कौन पूरा करें ! Compass box से लेकर tiffin box तक कौन तैयार करके दे ! टाई और शूज़ की डोरी तो हमें बाँधनी आती ही नहीं, वो भी तो मम्मी ही कर के देती थी।

स्कूल में मम्मी के हाथ से बना टिफिन उँगलियाँ चाटकर खाते, और Friends के साथ share करके कितना proud feel करते हुए कहते थे, कि मेरी मम्मी के हाथ की इडली खाकर देख, कितनी tasty है। स्कूल से लौटकर घर आते तो हमारे शरीर में से बहते पसीने की परवाह किए बिना ही हमें वो प्यार से Hug करती, माथा चूमती। और " ठीक से पढ़े कि नहीं " यह बात पूछे या न पूछे, यह जरूर पूछती कि, " टिफिन पूरा खाया कि नहीं, पेट भरा कि नहीं। "

फिर जल्दी से वो हमारे लिए खाना पकाती, गर्मागर्म फुलके बनाती और हम उस वक्त स्कूल की कथा सुनाते रहते थे। जिसका कोई सिर-पैर नहीं होता था, सिर्फ Time pass की बातें। फिर भी मम्मी हमारी बातों को बहुत Interest से सुनती, निहायत पकाऊ बातों का Response भी देती, और इसके बीच यदि रोटी थोड़ी भी जल जाती, तो अपने ही माथे पर हल्की सी चपत मारकर कहती, कि तेरी बातों के चक्कर में तो मेरी रोटी जल गई।

जब हम Teen age में कदम रखते हैं, तो हमारी Best Friend भी मम्मी ही होती है। भले ही वो हमें कभी-कभी सलाह दे रही हो ऐसा लगता, बार-बार ये कहना कि, 'ये करले - वो करले' जो हमें जरा भी अच्छी नहीं लगती, हम उसकी बातों से परेशानी भी महसूस करते।

जब हम College में Enter होते हैं, तो हमारी Life में दूसरे Friends की भी Entry होती है। मम्मी की ओर हमारा लगाव भी कम होने लगता है। Friends के साथ घण्टों तक Calls और Chatting करते, लेकिन मम्मी के साथ एक मिनिट भी नहीं।

Happy Mother's Day

फिर Life में एक ऐसा भी दिन आता है, कि Friends की Feeling भी खत्म हो जाती है। हम जब बहुत Hurt हो चुके हों, या Disappoint हों, तब वो हमारे पास आकर प्रेम से हमारे माथे पर हाथ फेरती। उसके हाथ में ऐसा जादू होता है, कि मानो हमारा सारा Tension उसने ले लिया हो। बेटा सब ठीक हो जाएगा' उसके इन शब्दों में बहुत Motivation होता था। हम Ego में आकर माफी न भी माँगें तो भी वो सामने से हमारी गलतियाँ माफ करती थी। हमारे लिए उसका ATM (Any Time Maafi) हमेशा खुला ही रहता।

माँ के प्रेम में "Condition apply" का Tag कभी नहीं होता। हमें सुधारने के लिए यदि वह गुस्सा कर भी दे तो थोड़ी ही देर में वो खुद रो देती है। लबो पर उसके कभी बददुआ नहीं होती बस एक माँ है जो कभी खफा नहीं होती। इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है। कितनी बात करें... हमारे पास, हमारे दिल में मम्मी की So many Chweet Chweet memories हैं। लेकिन, एक emotional बात कहूँ ...जिसे माँ का प्रेम नहीं मिला, उसे माँ के प्रेम की value होती है। जहाँ सुबह मम्मी की जगह 'रामू' उठाता हो, जहाँ

बना-बनाया टिफिन ही खाना हो, स्कूल का होमवर्क खुद ही करना हो, जहाँ स्कूल से लौटकर आने पर बैग फेंककर जिद या झगड़ा नहीं कर सकते, वहीं माँ के प्रेम की महिमा ठीक से समझ आती है।

Apple के CEO Steve Jobs को पता चला कि ये उसके माता-पिता असली नहीं, बल्कि पालक माता-पिता हैं, जन्म देने वाले माता-पिता कोई और ही हैं। उसकी माँ शादी से पहले ही माता बन गई थी, समाज की बदनामी के डर से उसने बच्चे को अनाथाश्रम को सौंप दिया। फिर वहाँ से एक दम्पति ने उस बच्चे को गोद लिया, और उसका पालन-पोषण किया। अब Steve Jobs ने अपनी Real Mom की तलाश करनी शुरु की। वर्षों बाद पता चला कि उसकी माँ का नाम जोएल है और वो लॉस एंजेलिस में रहती है, तो वह तुरन्त उससे मिलने के लिए भागा। जीवन में पहली बार माँ का चेहरा देखकर वह अत्यन्त भावुक हो गया, और माता की गोद में सर रखकर बच्चे की तरह रोने लगा। जब माँ ने Steve से माफी माँगी और रोते-रोते बोली, कि "मैं कैसी माँ हूँ, कि तुझे जन्म देकर तुरन्त छोड़ दिया।" तो Steve बोला, "माँ ! तुम्हे माफी माँगने की कोई जरूरत नहीं, वो तो परिस्थिति ही ऐसी थी, कि तुम क्या कर सकती थी। मैं तो तुम्हें Thank You कहने आया हूँ, कि तुमने Abortion नहीं करवाया और मुझे यह सुन्दर सृष्टि देखने का मौका दिया। इतनी प्यारी जिन्दगी की भेंट दी।"

Waiter, Saloon barber या Driver हमारी थोड़ी सी भी help करें, तो भी हम उन्हें Thank you बोलते हैं। Short time की help करने वाले को हम Thank you बोलते हैं। Life time and anytime help करने वाली Mom को Thank you कहने में हमारी जबान को तकलीफ होती है?

उसने हमें सिर्फ जन्म ही नहीं दिया, बल्कि 24×7 वो हमारी care करती है। ऐसी Mom को आज इतना जरूर कहना है कि, Thank you for giving me A Gift of Life.

क्या आपको पता है, कि देवानन्दा माता जब प्रभु वीर के समवसरण में आई, तो प्रभु को देखते ही उनके अन्तर्मन में भावनाओं की लहरें उमड़ने लगी, हृदय से वात्सल्य की धारा बहने लगी। ऐसा प्रेम भरा दृश्य देखकर गौतमस्वामी ने प्रभु वीर से पूछा, "हे प्रभो ! आपके प्रति इस स्त्री को इतना प्रेम क्यों है?"

तो प्रभु बोले, "गोयम ! ये तो मेरी माता है, मैं इनकी कुक्षि में 82 दिन तक रहा था।"

मात्र 82 दिन जिनकी कुक्षि में रहे, वो माता को प्रभु के प्रति इतना प्रेम !! और प्रभु का भी माता के प्रति इतना प्रेम !!

(याद रहे, कि प्रभु राग रहित होते हैं, प्रेम रहित नहीं।)

भले आज Mother's day है, किन्तु हमारे लिए Everyday is Mother's day. माँ हमें रोज प्रेम करती है, तो क्या हम उसे एक ही दिन प्रेम करेंगे?

Last Seen :

प्रश्न : दुनिया के सभी Love Songs में से No. 1 love song कौनसा है?

उत्तर : माँ के मुख की लोरी।

श्रमणी ! जिनशासन मणि

महिला तूं महान है

संजयभाई वखारिया

प्रभु के प्रति बेहद भक्तिभाव, गुरु भगवन्तों के प्रति वर्धमान अहोभाव, जिनशासन के प्रति असीम बहुमान भाव से जिनका हृदय भरा है, और जिनशासन के विराट प्रसंगों में जिनके सफल संचालन से भाविकों की आंखें नम होती है, ऐसे सुश्रावक की प्रथम लेखमाला का शुभारम्भ भी इसी "faithbook" से हो रहा है।
श्रमणी भगवन्तों के प्रति अहोभाव जगाने वाली यह लेखमाला सबके हृदय में सद्भाव की अभिवृद्धि करेगी।

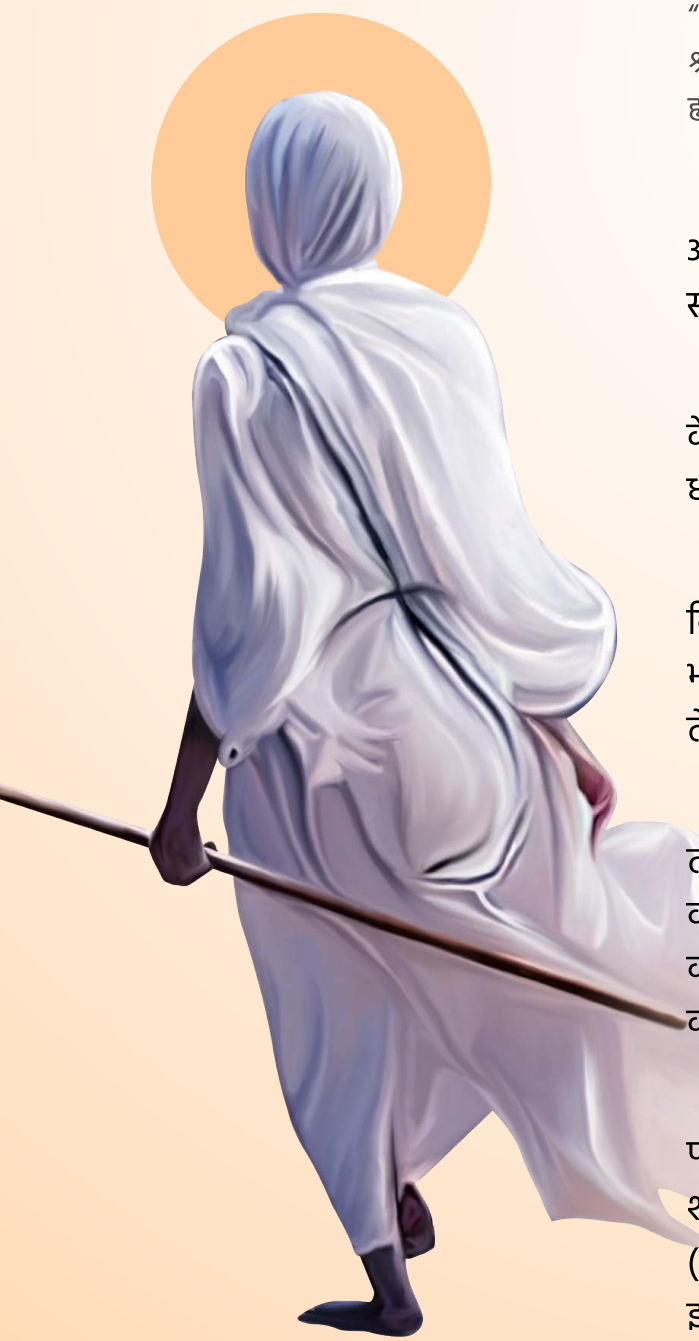

वर्तमान में पूरे विश्व में लगभग 650 अलग-अलग धर्म अस्तित्व में हैं। पहले 40-50 धर्मों में नारी को साधुता या संतत्व की दीक्षा प्राप्त होती थी।

समय की बहती धारा में आचार की शिथिलता, मोह के विलासों और अध्यात्म की विमुखता के कारण अधिकतर धर्मों में नारी की दीक्षा के द्वार बन्द जैसे हो गए।

किन्तु यहाँ जिनशासन ने एक अद्भुत आश्चर्य उत्पन्न किया!! दुराचार और व्यभिचार के अड्डों और वासना की भूख आज भी प्रभु वीर के शासन को स्पर्श नहीं कर पाई, और पवित्रता के तेज से जिनशासन की श्रमणी परम्परा आज भी जगमगा रही है।

कहीं श्रेष्ठ श्रमणों को जन्म देने वाली श्राविका माता है, तो कहीं श्रावकों को धर्म के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करने वाली भी श्राविका है, जो धर्मपत्नी शब्द को सच्चे अर्थ में सार्थक कर रही है। इसके अलावा धर्म के मार्ग पर चलने वाले को स्थिर करने की प्रेरणा देने वाली श्रमणी माता - गुरु माता भी है।

जैसे टेबल के चार पायों में से एक टूट जाए, तो टेबल पर चढ़ने वाले को गिरने का खतरा रहता है, उसी प्रकार प्रभु के शासन की इमारत चार महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भों पर टिकी है - (1) श्रमण, (2) श्रमणी, (3) श्रावक और (4) श्राविका। ऊँची इमारत की बाह्य सुन्दरता और भव्यता उसके मजबूत आधार

स्तम्भों को आभारी होती है। ये आधार स्तम्भ उसकी आन्तरिक सुन्दरता हैं।

भव्यातिभव्य जिनालय को देखते ही हमारे हृदय के तार सुरावली छेड़ने लगते हैं। किन्तु उसके मूल में उस मजबूत शिला का आधार होता है, जो किसी को दिखाई नहीं देती। ठीक उसी प्रकार जिनशासन श्रमण प्रधान है, श्रमण भगवन्त शिखर के स्थान पर विराजते हैं। किन्तु किसी की नजर में न आने वाली मुख्य आधार शिला यदि कोई है, तो वह श्रमणी भगवन्त है। ये अपने सत्व, साधना, सदाचार, शुद्धि और सामर्थ्य से शासन नामक इस इमारत को टिकाए रखती है।

जैन धर्म के विकास में नारी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नारी ने अनेक बार अपनी शक्ति का परिचय दिया है। देश, धर्म और संस्कृति में नारी अपने गुणों के कारण सदैव छाई रही है।

इस अवसर्पिणी काल में मोक्ष के द्वार खोलने वाली एक नारी ही थी। मरुदेवी माता ने मानो Ladies First के नियम को अपनाया और आदिनाथ भगवान से पहले मोक्ष गई।

साध्वी ब्राह्मी और साध्वी सुन्दरी ने अपने भाई महाराज को मधुर वचन सुनाकर अहंकार रुपी हाथी से नीचे उतारा।

समवसरण में प्रभु वीर ने जिसके सम्यक् दर्शन की प्रशंसा की थी उस महासती चेल्लणा ने राजा श्रेणिक के धार्मिक व्यामोह को दूर करके उन्हें सच्चे धर्म के दर्शन करवाए।

अरणिक मुनि की मोह निद्रा उड़ाकर संयम जीवन में पुनः स्थिर करने वाली करुणाशील माता साध्वी की पुकार से कौन अनजान है?

पालने में सो रहे अपने पुत्र को "शुद्धोसि, बुद्धोसि" की आध्यात्मिक लोरी सुनाकर उसमें सात्विक भाव भरने वाली माता मदालसा का विरक्त भाव कितना सुन्दर था?

वचन भंग करने वाले शान्तनु राजा को सन्मार्ग पर लाने के लिए भीष्म पितामह की माता गंगादेवी की वीरता वास्तव में बेजोड़ थी।

नारी के हृदय में गौरव और गरिमा की गंगा, जोशीली बोली की जमुना, और सेवा - समर्पण की सरस्वती का निर्मल और निःस्वार्थ प्रयाग होता है।

वन्दन हो श्रमणी भगवन्तों के चरणों में, महासतियों के चरणों में ... !!

सर्वमंगल :

मिला है मान भारत को, उन्हीं सतियों की शक्ति पर,
टिका है चाँद और सूरज, उन्हीं सन्तों की शक्ति पर।
सन्नारी ही देश में अभिनव ज्योति जलाती है,
सुन्दर, उज्ज्वल आदर्शों से धरा को स्वर्ग बनाती है।

Next Sunday

भक्ति की पात्रता विकसित करें
पं. श्री लब्धिवल्लभ म.सा.

मूलाधार चक्र ध्यान
मुनि श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

आप भी भगवान बन सकते हो!
मुनि श्री तिर्थबोधि विजयजी म.सा.

संकल्प से सिद्धि
मुनि श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Must Read

You can read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit:
www.faithbook.in

to receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp Please Message us on
81810 36036

Follow, Like & Subscribe : FaithbookOnline

• लाभार्थी •

सुरेखाबेन चिनुभाई शाह
रुपाल, भायंदर

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

17th MAY 2020
Issue 01• Part 03

पुद्गल से न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छीपावे;
उनसे अंतर नादी हमारो, अब कहां भागो जावे
परम प्रभु सब जन शब्दे ध्यावे

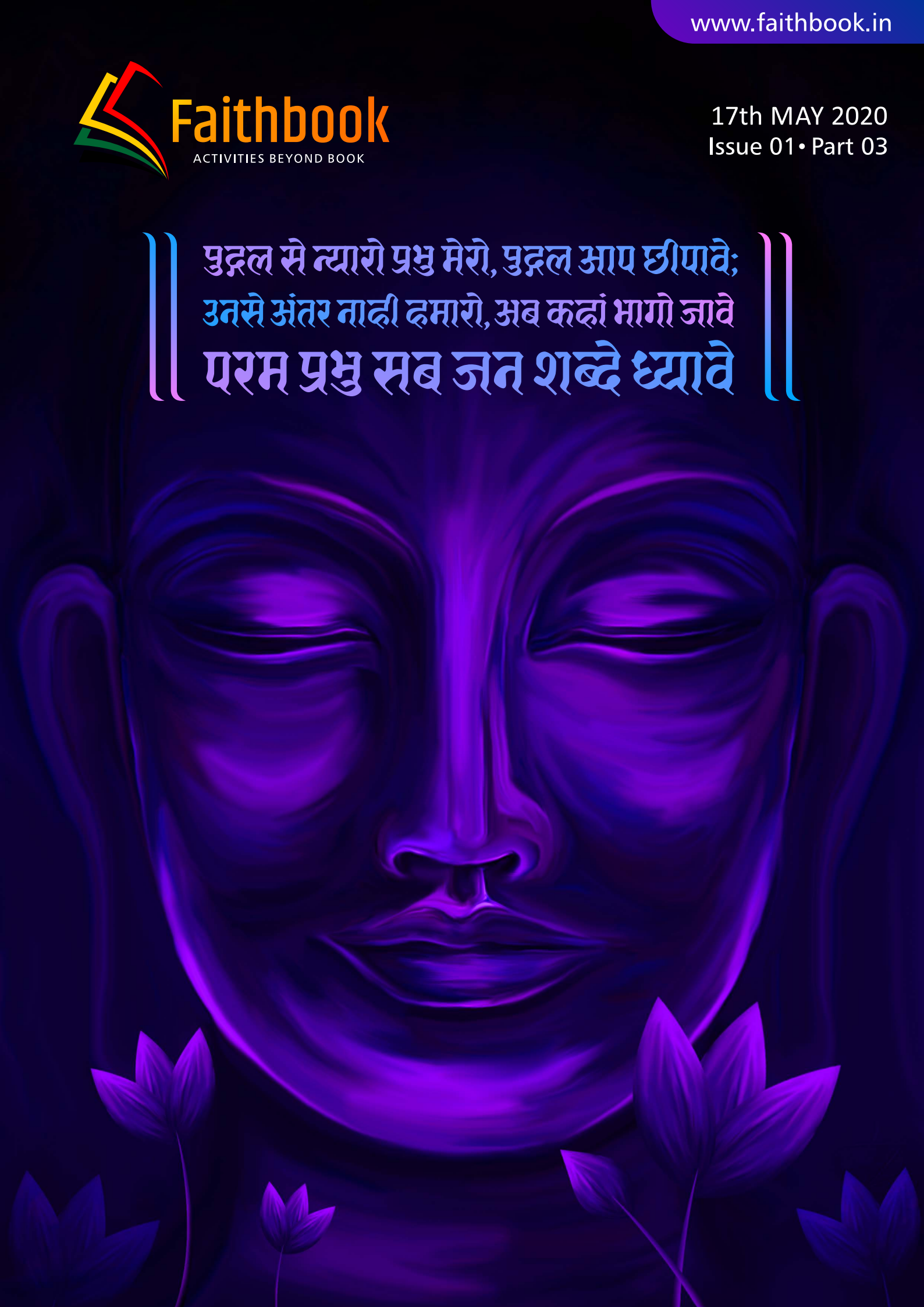

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

लाभार्थी

पुण्यप्रभावी पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

मंगुबेन चंदुलाल लल्लुदास शाह
नानाचेखला-भायंदर

पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

शांताबेन चंदुलाल पुंजालाल शाह
आगीयोल-भायंदर

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095
Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

ज्योत से ज्वाला

सादर प्रणाम,

प्रभु महावीर के अद्भुत सिद्धांत को अखिल विश्व में फैलाना है, जिससे विश्व में शांति-करुणा-प्रेम और सौहार्द का माहौल बने।

हमारा प्रयास है कि आप तक अनेक प्रकार के माध्यमों से प्रभु वचनों को पहुंचाया जाए। इसलिए हमारा पुरुषार्थ भी जारी है।

अभी का हमारा प्रयास भले ही प्रारंभिक स्तर का हो, परंतु कुछ ही समय में यह सम्यक् ज्ञान का प्रसार ओर ऊंचाइयों को छुएगा,
यह हमारा आत्मविश्वास है।

हमारी भावना है कि जन जन में... हर एक मानव के मन में प्रभु शासन का राग पैदा हो इसलिए आप सभी का सहयोग जरूरी है।

आइए, सब मिलकर ज्योत को ज्वाला में बदलें...!

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

साधना के भीतर

भक्ति की पात्रता विकसित करें

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

बाल्यकाल में दीक्षा लेने के पश्चात् ज्ञान-ध्यान की अलख जगाई और वर्तमान में युवावस्था होने पर भी जिनका हृदय अध्यात्म से सराबोर है, ऐसे पू. पंन्यास भगवन्त प्रभु वीर की साधना को सिर्फ उपसर्ग या परिषह सहन करने की सहिष्णुता में ही नहीं देखते, बल्कि इस साधनाकाल के भीतर गहराई में जाकर हमें भी साधना का स्पर्श करवाएँगे। यह लेखमाला अध्यात्म रसिकों के लिए अमृत भोजन की भूमिका निभाएगी, ऐसी आशा है।

आन्तरिक सौंदर्य की चित्ताकर्षक मोहकता
जिनके हर कदम पर अनावृत थी,
जिनकी आत्मनिष्ठ अदा से
घायल होते थे सब समझदार,
वे हो जाते थे उनके पीछे कायल
और कायल बनने के बाद पागल।
उस में भी उन्हें ऐसा लगता था, कि
यह पागलपन ही समझदारी का असली फल है।
भौतिक जगत में ऐसा कहा जाता हैं, कि
पागल बना दे, ऐसी समझदारी किस काम की,
किन्तु आध्यात्मिक जगत में तो यह कहते हैं, कि
पागल न बनाये ऐसी समझदारी किस काम की।

बिना पागल बने कुछ बातें समझ नहीं आती,
पागल होने का गुण,
भक्त होने का प्रमाण है।

आइए पागल बनते हैं...।

पागल होना पवित्र है या अपवित्र?
यह निर्भर करता है, कि आप किसके पीछे पागल हैं,
दिल में उमड़ती आनंद की लहरें,
कौन से स्तर से उछल रही हैं,
यह तो किनारे के चयन से ही पता चलता है,

ऊँची लहरों के किनारे,
अमर्यादित होते हैं।
किनारा तो बहाना है, समाप्ति के उत्सव का,
दरिया समाप्त होता है,
तभी तो किनारा धन्यवाद का पात्र बनता है।
समाप्ति का यह उत्सव,
कभी समाप्त नहीं होता,
क्योंकि यह अनन्त की समाप्ति है,
जो निरन्तर घटित होती है
स्वयं की सम्पूर्णता के साथ ...

हमारा पागलपन
एक चुल्लू भर पानी में उठती तरंगों के जैसा ही रहा, क्योंकि हमारा स्तर भी वैसा ही था,
हमारे किनारे अत्यन्त संकीर्ण और मर्यादित थे,
हमारा स्तर और उसमें से उठती लहरें भी छिछोली थी, किनारों को हम भिगो नहीं पाए, उल्टा किनारों ने मिलकर हमें शोषित कर लिया,
क्योंकि हम कीचड़ भरे गड्ढ़े में कैद थे, और अभी भी उस गड्ढ़े में रहना ही पसन्द है।

गड्ढ़ा, अर्थात् सादि-सान्त व्यक्तित्व,
गड्ढ़े में उठने वाली तरंगे
कीड़े-मकोड़े को पनपने देती हैं,
काम, क्रोध, मद, माया, हर्ष, शोक उन कीड़ों के नाम हैं।
वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, पैसे, पत्नी और परिवार, शरीर, यह सब किनारों के नाम हैं। नश्वर किनारें!!!
जो अस्तित्व का निर्णय किनारों के हाथ में है वह गड्ढ़ा है,
और किनारे का निर्णय जिस के हाथ में है,
वे पारावार है।

किचड़ भरा गड्ढा सिर्फ, मात्र जमीन में दरार होने से नहीं बनता, बल्कि उस दरार में पानी रुक जाने से बनता है। उसी प्रकार व्यक्तित्व भी,
अस्तित्व मात्र से अनुभूत नहीं होता,
बल्कि चेतना की आसक्ति से अनुभूत होता है।

गड्ढे के किचड़ जल को जब समंदर में समा जाने का अवसर मिलता हैं,
उस पल क्या होता है?
व्यक्तित्व में सीमित चेतना
जब प्रभुत्व (अस्तित्व) से मिलती है
उस पल क्या होता है?
इसका उत्तर शब्दों में ढालना सम्भव नहीं,
यह तो अभिव्यक्ति है, यही वह पागलपन की अनुभूति है।
स्तर परिवर्तन के बिना
भगवद्भक्ति का सामुद्रिक ज्वार सम्भव नहीं,
मिटानी होगी व्यक्तित्व के गड्ढ़े की हस्ती,
तड़पन से बाष्पीभूत होकर समाना होगा बादल में,
गड्ढ़े में नहीं, सागर में छलांग लगानी होगी,
तभी एकाकार हो पाएँगे उस अनन्त के साथ,
बाद में किनारे भी भीग जाएंगे धन्यवाद के भावों से।

हम तो बिना पागलपन वाली भक्ति कर रहे हैं,
यह तो बिना बरसात के सावन जैसा है,
और यदि थोड़ा पागलपन आया भी होगा,
तो वह सिर्फ चुल्लू भर पानी में उठी लहरें थी।
गड्ढे को ही गड्ढा पहचान पाता हैं,
सीमित, सीमित को ही पहचान पाता है,
प्रभु को भी इसी सीमितता से
पहचानने की मनपसंद "गलती" करके हमने
अपनी कल्पनाओं में काल्पनिक प्रभु की
काल्पनिक भक्ति की।
'परम' सुदूर है,
अपना से जिसका सुरजन होता है वो 'संसार' है,
'प्रभु' नहीं
प्रभु तो कल्पनातीत है, निर्विकल्प है,
प्रभु सृजन से नहीं, विसर्जन से मिलते हैं।

सृजन में सीमितता का अभिशाप है,
प्रभु असीम है, सृजन से परे है
वे अनंत सृजन और विसर्जन के साक्षी मात्र हैं।

जो विसर्जन सृजन के लिए हो,
वह विसर्जन नहीं, अपितु सृजन का गर्भकाल है;
पर्वत से टूटे पत्थर से सीमेंट बनती है,
उससे बिल्डिंग बनती है, बन्धन यथावत् है;
वृक्ष से फल, फल से बीज निकलता है,
वही बीज पुनः वृक्ष की जड बनता है,
परम्परा चालू है;
हमने भी अनन्त बार विसर्जन किया,
किन्तु सृजन करने के लिए किया,
इसलिए वह विसर्जन नहीं, विशिष्ट सृजन था,
विसर्जन वह है, जो स्वयं को विराट में विलीन कर दे, पूर्ण शून्य कर दे,
बुलबुला, विसर्जित होते ही
अनन्त आकाश में विलीन हो जाता है;
दीपक की ज्योत, बुझते ही अनन्त शून्य में
परिवर्तित हो जाता है।

बुलबुला, हाजिर रहकर नहीं फूटता,
ज्योति, विद्यमान रहकर नहीं बुझती,
विसर्जन, अनुपस्थिति माँगता है,

उपस्थिति ही सृजन है, और उपस्थिति ही संसार है।
उपस्थिति दो प्रकार की होती है
एक, अनुपस्थित की उपस्थिति,
दूसरी उपस्थित की उपस्थिति,
सृजन, अपने होने से पहले अनुपस्थित होता है,
और उत्पत्ति के बाद ही होता है।
सृजन का न होना, अनुपस्थित की उपस्थिति है
और उसकी उपस्थिति स्वयं एक उपद्रव समान है।
जैसे मांस का खुला पिण्ड,
जंगली कुत्तों और गिद्धों का आहार बनता है,
वैसे ही सृजन की उपस्थिति
काल रूपी श्वान का आहार बनती है।
सृजन, विसर्जन से पहले भी है,
बाद में भी, और बीच में भी
जिसका सृजन और विसर्जन सम्भव नहीं,
जो सदैव है, सतत है, आकाश की भाँति
यही है उपस्थित की उपस्थिति।

जन्म, अनुपस्थित की उपस्थिति है,
मृत्यु, उपस्थित होने के लिए अनुपस्थिति है,
निर्वाण, उपस्थित की उपस्थिति है
जो 'है' अब मात्र वही 'है'
और जो 'नहीं', अब वह 'नहीं'

हाजिर की हाजिरी पाने के लिए, गैरहाजिर की
हाजिरी से गैरहाजिर होना अनिवार्य है,
यही साधना है, यही निर्वाण का पथ है,
यही जन्म एवं मृत्यु का उल्लंघन कर पाने का
राजमार्ग है।

यह बात जिसे समझ आई,
उसे प्रभु के साधना काल की कथा
अवश्य रोमांचित करती है।
प्रभु 'वोसिरामि' की धारा से
सतत संप्रस्थापित होते थे
स्वभाव की धारा की ओर,
आइए, प्रभु की साधना को भीतर से स्पर्श करें ...!

ध्यानयोग

मूलाधार चक्र ध्यान

पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

तपस्या में रत पूज्य मुनिश्री ने ध्यान की प्रक्रिया पर लेख लिखकर ध्यान प्रेमियों को मिष्ठान थाल दिया है। पूज्य आचार्य श्री यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा.(पूज्य श्री आचार्य भुवनभानु सूरिजी म.सा.) ने यह ध्यान विषयक लेख का संशोधन करके महान उपकार किया है। जिनशासन मान्य ध्यान योग से आत्मा शीघ्र समाधि-सिद्धपद प्राप्त करेंगी ऐसा आत्मविश्वास है।

1. सबसे पहले शान्त चित्त होकर पद्मासन या सुखासन में बैठें।

2. फिर तीन मिनिट तक अनुलोम-विलोम करें। इसमें दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिनी नासिका बन्द करें, और बाईं नासिका से लें, फिर दाहिने हाथ की तर्जनी से बाईं नासिका बन्द करके दाहिनी नासिका से श्वास छोड़ें। फिर इसी मुद्रा में दाहिनी नासिका से श्वास लें और अँगूठे से दाहिनी नासिका बन्द करके बाईं नासिका से श्वास छोड़ें।

3. फिर शरीर को ढीला छोड़कर शान्त चित्त होकर आज्ञाचक्र (कपाल) पर ध्यान केन्द्रित करें और ॐकार का सात बार नाद करें।

4. फिर श्वासोच्छ्वास पर मन को केन्द्रित करें, शरीर ढीला रखें और मन, वचन एवं काया ध्यान की तैयारी करें। अब ऐसा विचार करें, कि आप ध्यान के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

5. अब मन में एक सरोवर की कल्पना करें। सरोवर के किनारे नन्दनवन जैसे एक रमणीय उद्यान की कल्पना करें। उस नन्दनवन में सरोवर के किनारे एक अशोक वृक्ष की कल्पना कीजिए। यह अशोक वृक्ष अत्यन्त प्रभावशाली एवं सभी प्रकार के शोक दूर करने में सक्षम है। आप उस वृक्ष के नीचे पद्मासन या सुखासन मुद्रा में पूर्वाभिमुख होकर बैठे हैं। अमावस्या की रात्रि बीतने के बाद भोर के सूर्योदय के अद्भुत दृश्य की कल्पना कीजिए। सरोवर का मनोरम दृश्य, सूर्य के साथ खिलते हुए कमल, अन्य जलचर जीव, पक्षियों के चहकने की आवाज आदि अनुभव करें।

फिर दोपहर का सूर्य देखें। बाहर की गर्मी के कारण सरोवर के जीव अन्दर चले गए, इसलिए पूर्ण शान्ति है। आप अशोक वृक्ष के नीचे बैठे शीतलता अनुभव कर रहे हैं। चारों ओर गर्मी होने पर भी वृक्ष के नीचे शीतलता है। शाम के समय सूर्यास्त होता देखें। सभी पक्षी अपने घोसलों में लौट रहे हैं, सरोवर के जीव पुनः खेल रहे हैं, सूर्य पर निर्भर कमल भी बन्द हो रहे हैं। अब पूर्ण सूर्यास्त हो गया, जरा भी उजाला नहीं रहा, अमावस की रात है, तारे टिमटिमा रहे हैं।

रात्रि का एक प्रहर बीतने के बाद, आप देख रहे हैं कि सरोवर में स्थित तेजस्वी किरणों सा दिखने वाला अमृत झरना आकाश की ओर उछल रहा है। वह पवित्र अमृत जल उछलते हुए आपकी ओर भी आ

रहा है, ऐसा विचार कीजिए। वह जल पहले आपके चरणों को स्पर्श कर रहा है। पानी धीरे-धीरे बढ़ रहा है, और अब हृदय, गले और मस्तक तक पहुँच कर पूरे शरीर को पवित्र कर रहा है, नहला रहा है।

वह जल ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँच कर सबसे पहले "सुषुम्ना नाड़ी" को खोल रहा है। अब वह जल उसमें प्रवेश करके उस नाड़ी को पवित्र बना रहा है। फिर "वज्रा नाड़ी" खुल रही है, वह जल उसमें प्रवेश करके उस नाड़ी को पवित्र बना रहा है। फिर "चित्रिणी नाड़ी" खुल रही है, अब वह जल उसमें प्रवेश करके उस नाड़ी को पवित्र बना रहा है। अब "ब्रह्म नाड़ी" खुल रही है, और वह जल उसमें प्रवेश करके उसे पवित्र बना रहा है।

इस प्रकार समस्त नाड़ियों को पवित्र करते हुए अन्दर गया वह जल बाहर न निकले, इसलिए समस्त नाड़ियाँ बन्द हो रही है। अब मात्र शुद्ध चेतना है, अन्दर स्थित जल अब धीरे-धीरे शान्त और स्थिर हो रहा है, और अन्ततः पूर्ण स्थिर हो गया है। उस अमृत जल के कारण आत्मा भी एकदम पवित्र हो गई है, आनन्द अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है।

6. फिर शान्त चित्त होकर सरोवर को देखिए, उसका अवलोकन कीजिए।

7. फिर विचार कीजिए कि दूर क्षितिज से लाल रंग की कोई चीज आ रही है। वह धीरे-धीरे निकट आ रही है, बड़ी हो रही है। वह लाल रंग का कमल है, अब उसकी लाल रंग के कमल की पंखुड़ी देखिए, वह कमल धीरे-धीरे खिल रहा है, प्रकाशमान हो रहा है। फिर उसकी हरे रंग की कर्णिका और पीत वर्ण का पराग देखिए।

8. उस पराग के मध्य में पीले रंग से 'लँ' अक्षर बनाइए, और उस अक्षर के मध्य में लाल रंग का त्रिकोण बनाइए। लाल रंग के त्रिकोण की पीठिका पर एक सर्प की धारणा कीजिए। वह सर्प साढ़े तीन मोड़ लेकर शान्ति से बैठा है। आप उसके साढ़े तीन मोड़ पर लोगस्स सूत्र द्वारा 24 तीर्थंकरों का अवधान कीजिए। पहले मोड़ पर 1 से 7, दूसरे मोड़ पर 8 से 14, तीसरे मोड़ पर 15 से 21 और 22 से 24 आधे मोड़ पर हैं, इस प्रकार विचार कीजिए। (क्रमशः)

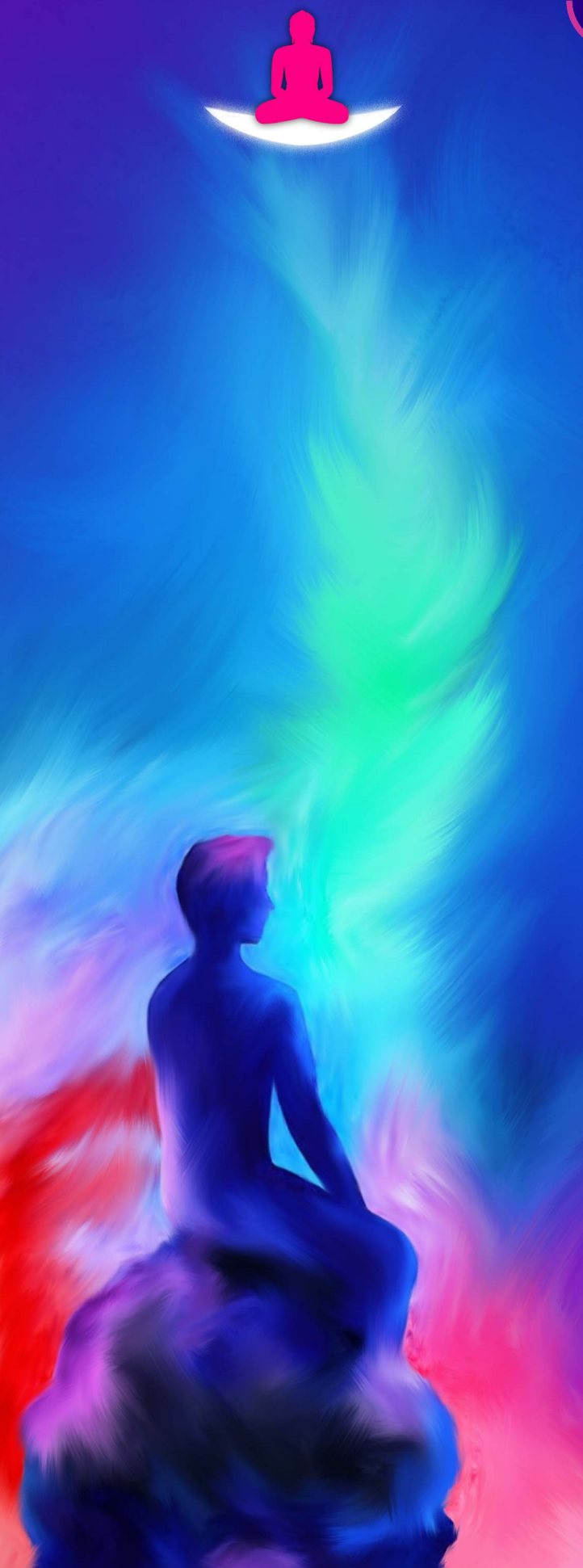

Think Beyond

संकल्प से सिद्धि

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

रात्रि प्रवचन, जाहिर प्रवचन और शिविरों के माध्यम से पूज्य मुनिवर युवाओं को जिनशासन के रागी बना रहे हैं और जिन के प्रवचन सुनने के लिए लोग कायल है। ऐसे मुनिवर की कलम को पढ़कर आप भी जरूर आनंद विभोर हो जाएंगे। दृष्टांत से सिद्धांत की समझ देने वाली यह लेखमाला वाचक वर्ग को जरूर पसंद आएगी।

मोक्षेण योजनात् योग :। हमारा किया हुआ वो ही धर्म - योग बन सकता हैं, जो हमें मोक्ष के साथ जोड़े। उसके लिए पूज्य महोपाध्याय श्री यशोविजयजी म. सा. ने योगविंशिका ग्रंथ में पांच प्रकार के "आशय" बताये है। उसमें प्रथम आशय “प्रणिधान“ बताया है।

प्रणिधान यानि संकल्प। संकल्प की बहोत बड़ी ताकत होती है। संकल्प का जितना ज्यादा कडा पालन करते जाये उतनी उसकी सिद्धि तक पहुंचने की ताकत बढ़ती जाती है। जैसे "अभरक" नाम की औषधि को एक हजार बार जब पीसा जाता है,तब वह चमत्कारी संजीवनी औषधि बन जाती है।

दृढ़ संकल्प की क्या ताकत है, चलो देखते हैं ,

प्राय: डेढ़सौ साल पहले अमेरिका में एक प्रख्यात अभिनेता हो गए। उनका नाम चार्ल्स कालगन था।

उनकी नाटकमंडली बहोत लोकप्रिय थी। चार्ल्स का अभिनय भी बहोत असरकारक था, उसे पैसे का पागलपन भी नहीं था, सबको निर्दोष मनोरंजन देना वो ही उसका मुख्य लक्ष्य था।

और दुनिया तो ऐसे निःस्पृह मनोरंजक के पीछे पागल तो बनती ही है। चार्ल्स के हजारो चाहक थे,जहाँ जाये वहाँ मान- सन्मान मिलता था,चार्ल्स मूलरूप से

कैनेडा के प्रिंस द्विपका निवासी था, और उसे अपनी मातृभूति के प्रति बहुत लगाव था, वह अपने चाहको से बार- बार कहता था की में जब मर जाऊ तब मुजे मेरी मातृभूमि में ही दफनाना ।

एक कहावत है की- महेमान और मौत कब आये वो पता नहीं चलता,एक बार अमेरिका के टेक्सास में एक समन्दर किनारे के नजदीक चार्ल्स का नाटक चाल रहा था। चार्ल्स उसमें एकाग्र बनकर अभिनय कर रहा था। वहाँ पर उसे दिल का दौरा पड़ा, चार्ल्स वहीं पर गिर पड़ा। सभी दर्शक आघात के सागर में जा गिरे, स्मशानवत् सन्नाटा छा गया, कोई मानने को तैयार न था की चार्ल्स हमारे बीच रहे नहीं।

हजारो चाहक इकट्ठा हुए, सबको चार्ल्स की अंतिम इच्छा पता थी, लेकिन कहा टेक्सास और कहाँ केनेडा का प्रिंस द्विप? हजारो कि.मी. दूर थी चार्ल्स की जन्मभूमि, तब आज जैसी विमान सेवा भी नहीं थी| टेक्सास के समन्दर किनारे आये हुए कब्रस्तान में दफनाना तय हुआ। चांदी के पतरावाले कोफ़ीन में चार्ल्स का मृतदेह रखकर, उस पर सुवर्ण अक्षर से लिखा था, " यहाँ अमेरिका का प्रख्यात अभिनेता चार्ल्स कालगन सोया हुआ है | जिसने जीवन की अंतिम घडी तक जगत को मनोरजंन दिया हैं "। हजारो चाहको कि उपस्थिति में दफ़नाने की अंतिमविधि हुई। रोती आंखो को लेकर सब अपने घर गये।

ये घटना के थोड़े दिन बाद टेक्सास के समन्दर किनारे पर बड़ा तूफान आया। वो तूफान ने कब्रस्तान की दिवारे तोड़ दी, जमीन खीसक गयी, सारे कोफ़ीन तैरते तैरते दरिया में बहने लगे। चार्ल्स का कोफ़ीन भी बहने लगा लेकिन आश्चर्य इस बात का हुआ की समन्दर की लहरें और हवा के कारण सारे कोफ़ीन वेस्ट इंडीज की ओर बह रहे थे जबकि एक मात्र चार्ल्स का कोफ़ीन ही दरियाइ प्रवाह के सामने उत्तरकेनेडा के हडसन बंदर की और बहने लगा।

दस महीने की लंबी मुसाफरी बाद चार्ल्स का कोफ़ीन अपनी मातृभूमि प्रिन्स द्विप पर जा पहुंचा। मछुआरों ने खींचकर जमीन पर लाकर देखा और पढ़ा तो पता चला ये तो अपनी ही मातृभूमि को बहुत प्यार करने वाला चार्ल्स का कोफ़ीन है। उसकी अंतिम इच्छा यहाँ पर ही दफ़न होने की थी, लेकिन जो कार्य उसके हजारो चाहक न कर सके वो कार्य कुदरत ने करके दिखाया।

हजारो लोगों ने मिलकर चार्ल्स की फीर से अंतिमविधि की। सबकी जुबान पर एक ही बात हो रही थी की चार्ल्स का संकल्प सिद्धि तक पहुंचा।

जब संकल्प शुद्व और निस्वार्थ मन से और दृढ़ प्रणिधान से किया जाता है तब वह संकल्प को पूर्ण करने के लिए सारी कायनात काम पर लग जाती हैं।

हमें भी हमारी मनुष्य ज़िंदगी को सफल, सुंदर और सार्थक बनाने हेतु शुभ संकल्प करना चाहिए

जैसे की
1) मुजे संयमी बनना है।
2) मुजे ब्रह्मचारी बनना है।
3) मुजे जिनाज्ञा चुस्त बारह व्रतधारी श्रावक जीवन जीना है।
4) मुजे पापमुक्त और प्रसन्नता युक्त जीवन जीना है।

चलो! आज से ही ऐसा शुभ संकल्प करना शुरु करें।

परमात्मा बनने के 20 Steps

आप भी भगवान बन सकते हैं!

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

शास्त्रबोध, संवेदनशीलता और शीघ्र-कवित्व का व्यक्तित्व धारण करने वाले मुनिवर ने, भगवान बनने का राजमार्ग, अर्थात् वीसस्थानक पर नूतन काव्यों की रचना की और साथ उनकी ऐसी विवेचना की, जो युवा हृदय को छू ले। इस लेखमाला में हर अंक में एक-एक पद की प्राप्ति हेतु शब्द सोपान की रचना की जाएगी। पाठक उस पर आरोहण करके निश्चय ही आनन्द अनुभव करेंगे।

नमस्ते फ्रेंड्स, मुझे मालूम है कि आपको थोडा अजीबो गरीब लगेगा, पर अभी बायडिफोल्ट कोरोना के चीनी ड्रैगन ने सभी को हाय और हेल्लो पर से नमस्ते पर लाकर रख दिया है | So that is Corona Effect...

दर असल बात यह है कि, दुनिया के अनगिनत धर्मो में से सिर्फ एक जैनधर्म ही ऐसा है,जो इस बात का विश्वास एवं भरोसा दिलाता है कि "आप भी भगवान बन सकतें हो "आप चाहे कोई भी क्यों न हो। जैन हो या अन्यधर्मी,बच्चे हो या बुजुर्ग, पुरुष हो या महिला..हाँ, आप भी भगवान बन सकते है।

रास्तें भी एक दो ही नहीं, बल्कि बीस- बीस हैं। Choice is Yours, आप को जो पसंद हो चुन लो.. सभी रास्ते वैसे बहुत आसान हैं, पर कहीं कहीं मुश्किल भी हैं, पूरी दुनिया के परमात्मा बनना भला इतना भी आसान कैसे हो सकता है ?

शास्त्रों में उसे 'बीस स्थानक' कहे गये है|कभी आप मंदिर में पूजा करने जाते होंगे तभी ध्यान से देखोगे तो देख पाओगे कि हर एक बड़े मंदिर में लगभग बीस स्थानक का यंत्र होता हैं,जो धातु के गोल पट्ट पर बनाया गया होता हैं।

उन बीस स्थान को ही हम बीस स्टेप्स कहेंगे.. एक एक स्टेप्स हमें सीधा परमात्मा बना सकता है। ऐसी कुछ खासियत हैं इनमे, ऐसा कुछ पावर हैं इनमें।

सबसे पहेला सोपान है - अरिहंत पद।

आप सभी जानते ही होंगे कि नमस्कार महामंत्र में भी सर्वप्रथम अरिहंत प्रभु को ही नमन किया गया हैं -" नमो अरिहंताणं "

किसी भी श्रीमंत के आगे पीछे घूमनेवाले, उनके इर्द गिर्द भीड़ ज़माने वाले लोगों के मन में एक भावना तो अवश्य ही रहती हैं कि,उस श्रीमंत की नज़र पड़ जाए, तो वो भी श्रीमंत बन जाए। पर ऐसे दयालु सेठ बहुत कम मिलते है जो खुद के नौकर को खुद के जैसे बना दें।

अरिहंत परमात्मा की उपासना मे वह शक्ति है,वह ताकत है, वह जोश है कि जिससे भक्ति करने वाला खुद भी भगवान बन जाता है। इसलिए पंचसूत्र नाम के ग्रंथ में कहीं है-"अचिंतसत्ती जुत्ता हि ते भगवंतो "यानी अरिहंत भगवान अचिंत्य शक्ति शाली है।"

तो यह हुआ अरिहंत बनने का पहेला स्टेप|आप रोजाना भगवान कि पूजा करें,भगवान के दर्शन करें, और उससे भी ज्यादा भगवान की स्तुति करें,तब आप को भी भगवान खुद के जैसा बना देंगे। अगर आपको स्तवन नहीं आता या कोई भी भजन - भक्तिगीत नहीं आता,इस वजह से आप चिंतित हो कि क्या करें और कैसे करें ?

तो दोस्तों ! चिंता ना करें आप के पसंदीदा तर्ज पर यहाँ पर पेश किया जाता हैं एक सुंदर भक्तिगीत ! इसे गाईए,और प्रभु से प्रभु बनने का सौदा पक्का कर लीजिए.....

अरिहंत पद

(कव्वाली : झोली भर दे)

तेरे दरबार आ में खड़ा हूं,
मुझ को भी तेरे जैसा बना दे ।।

मैंने ढूंढा तुझे इस जहां में,
हर जगह पर जमी आसमा में।
मैं थका और भीतर से तू बोला,
" मैं यही हूं तेरी आत्मा में " ।।1।।

तूने सबकी भलाई ही चाही,
उससे दुनिया की दौलत कमाई ।
मैं तो करता रहा छेड़खानी,
मैंने खुद ने ही खुद की बिगाड़ी ।।2।।

अब नहीं मांगना तेरे आगे,
गर तू चाहे तो इतना दिला दे ।
तु बना जिससे परमात्मा है,
वो करूणा मुझमें भी मिला दे।।3।।

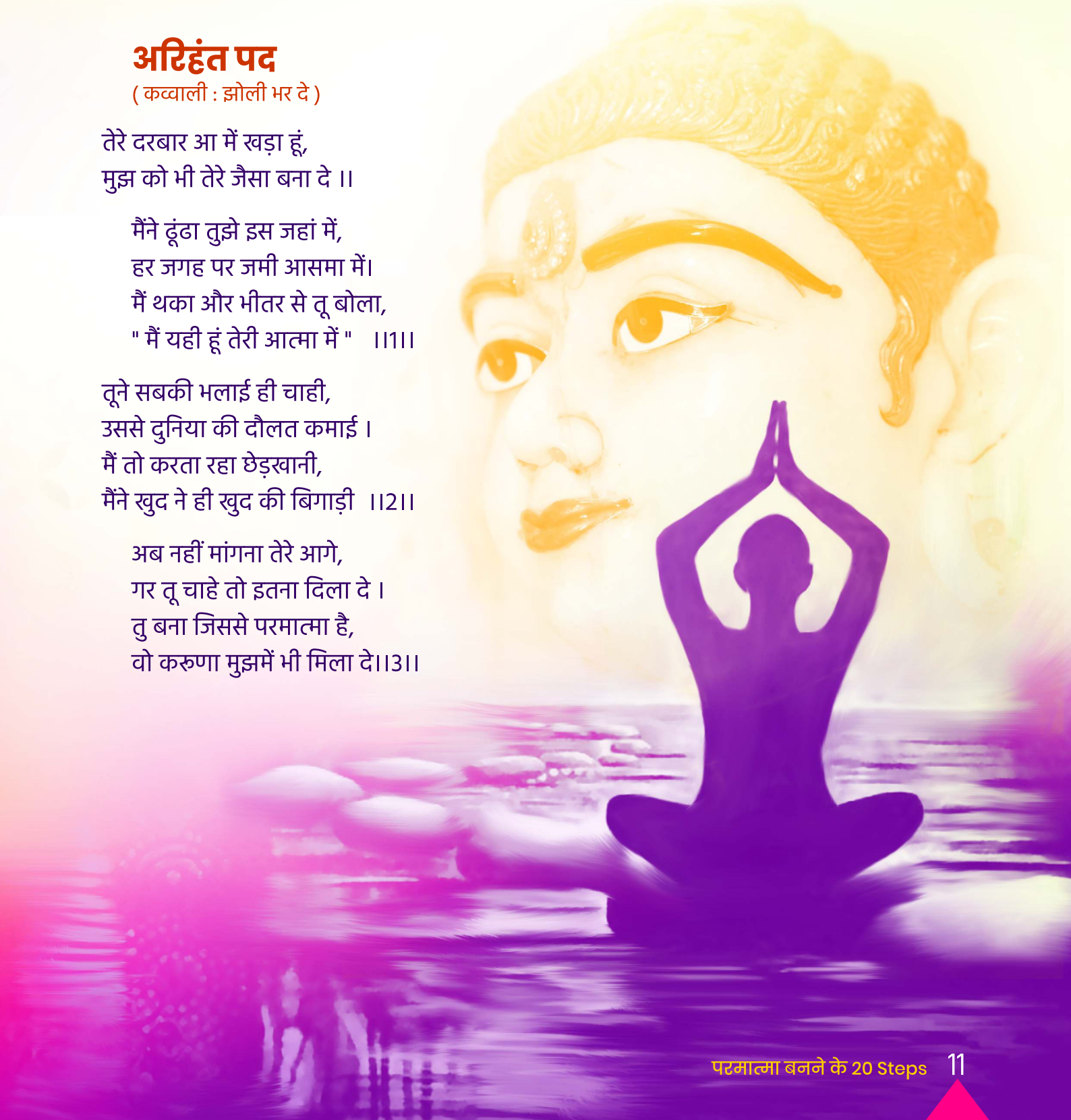

Next Sunday

Carrier & Character
पूज्य मुनिराज श्री अक्षयकीर्ति विजयजी म.सा.

Save Family
" प्रियम् "

बेनकाब (नवलकथा)
पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

Must Read

You can read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit:
www.faithbook.in

to receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp Please Message us on
81810 36036

Follow, Like & Subscribe : FaithbookOnline

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

24th MAY 2020
Issue 01• Part 04

OPEN YOUR EYE & CLOSE YOUR I

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

॥ अहो श्रुतज्ञानम् ॥

सादर प्रणाम,

दिल बाग-बाग हो रहा है! क्योंकि इस Knowledge Book के साथ हमारा प्रथम अंक (First Issue) चार भाग के साथ संपन्न हो रहा है। पूज्य देव-गुरु के असीम आशीर्वाद एवं आप सभी के सकारात्मक सहकार के कारण ही यह संभव हुआ है। इस भाग (Part 4) में परिवार के विषय में बहुत ही सुंदर लेख है, साथ ही दूसरे लेख में आचार संपन्नता का महिमा समझाया है।

सबसे बड़ी आनंद की बात तो यह है कि इस भाग से महीनों महीनों तक चले ऐसी अद्भुत नवलकथा का शुभारंभ हो रहा है।

आप पढ़िए और सभी को यह सद्वाचन की प्रेरणा करें, यही शुभ अभिलाषा...

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

• लाभार्थी •
पू. मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से
विमलाबेन चंदुलाल मंगलदास शाह
रूपाल-भायंदर

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit: **www.faithbook.in**

To Receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp.
Please Message us on **81810 36036**

Click on below icons to Follow, Like & Subscribe : **FaithbookOnline**

All icons are Clickable

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

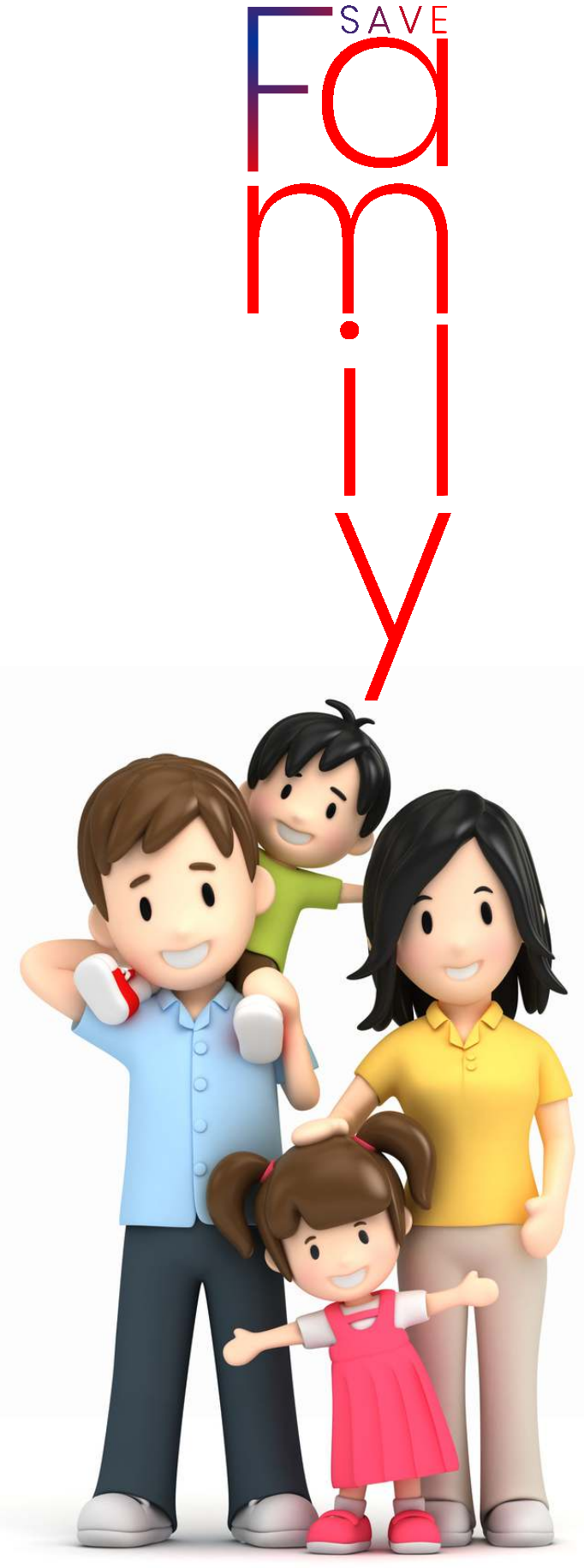

Save Family

परिवार का प्रेम

" प्रियम् "

जिन्होंने अनेक धर्म-सम्प्रदायों के ग्रन्थ एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन किया और वर्तमान के विद्वानों में जो पहली पंक्ति में बैठते, ऐसे तीव्र मेधावी मुनिवर की विविध विषयों की यह लेखमाला मात्र प्रौढ़ या प्रबुद्ध वर्ग को ही नहीं बल्कि युवाओं को भी आकर्षित करेगी।
Life को Change करने वाले लेख जीवन को नई दिशा देंगे।

दिलीप भाई ऑफिस पहुँचे, पूरा स्टाफ अपनी सीट से खड़ा हो गया, प्यून, क्लर्क, मैनेजर - सबकी आँखों में आश्चर्य था। दिलीप भाई ने रुमाल निकाला और उससे दो कार्य साथ में किए, एक चेहरा छिपाने का, और दूसरा अपने आँसू पोंछने का। कोई कुछ भी पूछ नहीं पाया। तेज रफ्तार से दिलीप भाई अपनी केबिन में चले गए। सभी स्टाफ अपने मन मे तरह-तरह की सोच को आकार दे रहे थे। दस मिनिट के बाद मैनेजर किसी कार्य के लिए केबिन में गया, किन्तु सर की यह स्थिति देखकर वह थोड़ा उलझन में पड़ गया।

कुछ पल ऐसे ही बीते, फिर उसने पूछा, "क्या हुआ सर?" दिलीपभाई ने कुछ जवाब नहीं दिया, बस अपने मोबाइल की तरफ इशारा किया। मैनेजर ने मोबाइल की स्क्रीन देखी। दिलीपभाई ने सिग्नल के पास खड़ी अपनी कार में से फुटपाथ के एक दृश्य का फोटो लिया हुआ था। कुछ 27 मिनिट पहले यह फोटो लिया गया था। मैनेजर ने फोटो में देखा कि एक भिखारी, उसकी पत्नी और उसके दो लड़के और दो लड़कियाँ किनारे पर बैठे, किसी पुराने बैनर की कार्पेट बिछाए एक थाली और दो-तीन ग्लास और कटोरी लेकर खाना खा रहे थे। वह

भिखारी और उसकी पूरी फैमिली अतिशय खुश नजर आ रहे थे। रस्ते में दो-तीन कुत्ते अपनी पूंछ हिलाते हुए वहाँ आए थे और भिखारी द्वारा दिए गए थोड़े खाने को खा रहे थे। इसमें रोने जैसा क्या था? यह बात मैनेजर को थोड़ी ही देर में अपने आप समझ आ गई थी। वह भिखारी फुटपाथ पर होते हुए भी हकीकत में बंगले में रहने जैसा आनन्द उठा रहा था, और सर अपने भव्य बंगले में रहकर भी मानो फुटपाथ पर थे। मैनेजर को समझ आ गया था, कि सर को कौनसा दुःख सता रहा है।

आज मुझे Save Family की बात करनी है। यदि आतंकवादी हमले में पूरी फैमिली की मौत की बात की जाए, तो शायद आप सुनेंगे किन्तु आतंकवादी हमले भी अनेक प्रकार के होते हैं और ये अनेक प्रकार से हमारी फैमिली को ख़त्म भी कर रहे हैं, जिसका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते है।

दिलीप भाई का क्या लुट गया था, यह बात उन्हें फुटपाथ का नजारा देखकर पता चल रहा था। आज हमें भी ग्राउण्ड लेवल पर आना है, न्यूट्रल बनना है और खुले दिल से समझने का प्रयास करना है, कि हमारा क्या लुट रहा है, और क्यों?

(1) **Fantacy : Family शब्द का पहला अक्षर है F,** और यहाँ F stands for Fantacy. I ask you, आपके सपनों के विशिष्ट घर और विशिष्ट जीवन की आपकी डेफिनिशन क्या है? लेटेस्ट कार्पेट हो, उसे विशिष्ट घर कहेंगे? या कार्पेट कैसा भी हो, किन्तु उस पर बैठे हुए परिवार का मेला सा लगा हो वह विशिष्ट घर है। सेन्ट्रल एयर-कण्डीशन हो वह विशिष्ट घर है? या कैसी भी कण्डीशन में सबका माथा ठण्डा हो, वह विशिष्ट घर है। ड्राइंग रुम में होम थियेटर हो या हर रुम में पर्सनल टीवी हो वह विशिष्ट घर है? या जहाँ सतत एक-दूसरे पर स्नेहदृष्टि जाती रहे और

एक-दूसरे का ख्याल रखते रहें, वह विशिष्ट घर है। नौकरों के कारण सभी लोग आलसी और सुस्त होकर मक्खियाँ उडा रहे हों वह विशिष्ट घर है? या सब लोग अपना विनय-व्यवहार निभाते हुए सेवा में एक्टिव हों, वह विशिष्ट घर है।

आप लोग नकली फेंटसी के मायाजाल में फंसे हुए हैं। मृगजल को अमृत मानकर उसके पीछे-पीछे भागते हैं और अन्ततः प्यासे ही रह जाते हैं। इस फेंटसी का 99% सत्य यही है, कि यह जैसे-जैसे बढ़ती है, वैसे-वैसे परिवार की पारिवारिकता घटती जाती है। जब आपके परिवार में पैसा नहीं था, उस समय का दृश्य और आज के दृश्य की तुलना कीजिए। जब आपके घर में महँगे टीवी, ऐ.सी., वॉशिंग मशीन आदि नहीं थे, उस समय के दृश्य और आज के दृश्य को याद कीजिए। जब आप किराए के घर में रहते थे, और आज के दृश्य के बीच तुलना कीजिए। फेंटसी लगभग फैमिली की कोस्ट पर मिलती है। आप अपनी बेटी को बेच कर महँगा टीवी लाते हैं, अपने बेटे को बेचकर महँगी कार लाते हैं, अपनी पत्नी को बेचकर फॉरेन टूर पर जाते हैं, अपने-आप को बेचकर हाई सेलेरी या हाई प्रॉफिट लाते हैं, अपनी शान्ति को बेचकर महँगा मोबाइल लाते हैं, अपने स्वास्थ्य को बेचकर हाई-फाई होटल का फूड खाते हैं, अपनी एकता को बेचकर बड़ा घर खरीदते हैं, और अपने प्रेम को बेचकर प्रॉपर्टी लाते हैं।

आप ज़रा तटस्थ भाव से सोचिए, पुत्र और पुत्री आपके हाथ से निकल जाए, पत्नी और यहाँ तक कि आप ख़ुद अपने नियन्त्रण में न रहें, प्रेम, शान्ति, स्वास्थ्य और एकता घर से निकल जाए, उस समय आपके द्वारा लाई गई साधन-सामग्रियाँ किसी शव के श्रृंगार से अधिक और क्या है?

यदि महंगा टीवी आपकी बेटी के संस्कार के लिए फांसी का फन्दा बन रहा हो, तो यह फेंटसी नहीं, बल्कि ट्रैजेडी है, यदि महंगा मोबाईल आपके बेटे की पवित्रता का कत्ल कर रहा हो तो वह फेंटसी नहीं है, मगर ट्रैजेडी हैं । यदि महंगी कार आने के बाद आप अपने रिश्तेदारों से दूर हो जाते हों, तो यह फेंटसी नहीं, बल्कि ट्रैजेडी है; कहने को तो भले सभी सुख मिल रहे होंगे, किन्तु प्रेम, शान्ति, स्वास्थ्य और एकता सब भूतकाल की बात हो जाए तो यह फेंटसी नहीं, बल्कि ट्रैजेडी है।

यदि आप यह तर्क देते हैं, कि यदि ये सब उपभोग की सामग्रियाँ नहीं लें, तो फिर इतनी कमाई करने का क्या अर्थ है? तो जवाब में मैं यही कहूँगा कि इतना पैसा कमाना नितान्त मूर्खता है। जरूरत से ज्यादा कमाई की ही क्यों? पारिवारिक गैप बढ़ाने के लिए? अपनों से दूर रहने के लिए? सगे बेटो में झगड़ा करवाने के लिए? संस्कारों के सत्यानाश के लिए?

यदि आप सेफ्टी के लिए अधिक आय की वकालत कर रहे हो, तो पवित्र उत्तराध्ययन सूत्र आप को जवाब दे रहा है :

वित्तेण ताणं ण लभे पमत्ते,
इमम्मि लोए अदुवा परट्ठा ।।

हे आत्मन्!
अपना पागलपन छोड़ दे, पैसे से तेरी सुरक्षा नहीं होने वाली, इस भव में भी नहीं, और परभव में भी नहीं।

नीतिसूत्र में कहा है: अर्थो हि कन्या परकीयमेव।
संपत्ति, कन्या की भाँति है आप उसे जन्म देते हैं, पोषण-पालन करते हैं, उसका अपने प्राणों से भी अधिक जतन (संरक्षण) करने पर भी वह पराई ही होती है।

धर्मसूत्र में लिखा है: वित्तमायाति याति च।
पैसा तो आता है, और चला जाता है।

अध्यात्मसूत्र कहता है: स्वप्नलब्धधनविभ्रमं धनम्।
धन को स्वप्न में प्राप्त धन मान लो या, इससे अधिक अच्छा यह होगा, कि इसे मात्र भ्रम मानो।

वैराग्यसूत्र में लिखा है: संपत्तिओ तरंगलोलाओ।
समुद्र की लहरें, जितनी स्थिर होती हैं, उतनी ही स्थिरता सम्पत्ति की होती है।

अस्थिर पैसे से खरीदी हुई अस्थिर फेन्टसी आपके परिवार को पूर्णतया अस्थिर कर डालेगी, और साथ ही स्थिर समस्या में डाल देगी; क्या यह आपको समज में नहीं आता?

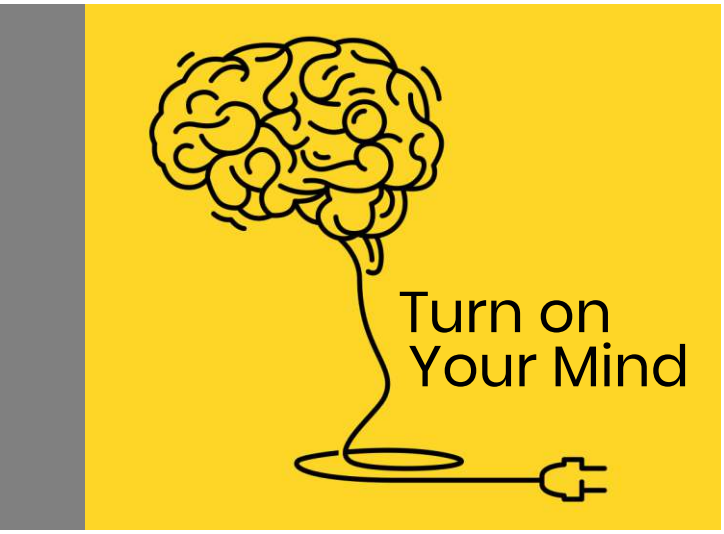

Mind Charger

Career & Character

पूज्य मुनिराज श्री अक्षयकीर्ति विजयजी म.सा

प्राचीन साहित्यों में तीन चीजों को रत्न की उपमा दी गई है, जल, अन्न और सुभाषित। इनमें से सुभाषित रत्न का जगमगाता प्रकाश पू. मुनि भगवन्त हमारे समक्ष लेखमाला के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। संस्कृत से संस्कृति का सन्देश देने वाला यह लेख युवावर्ग बड़े चाव से पढ़ेंगे।

"प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत, नरश्चरितमात्मनः।
किं नु मे पशुभिस्तुल्यं, किं वा सत्पुरुषैरिति ।।"

जगत में देखने वाले लोग बहुत हैं, जगत को (पर को) देखने वाले लोग भी बहुत हैं, किन्तु निरीक्षण करने वाले लोग कम हैं। इसके अलावा स्वयं का निरीक्षण करने वाले तो और भी कम हैं।

यहाँ देखने का अर्थ है ऊपरी तौर पर देखना, और निरीक्षण का अर्थ है सुक्ष्मता से, बारीकी से देखना, गहराई से समझना।

दुनिया बहुत देख ली, अब स्वयं का निरीक्षण करने की जरूरत है। Self-Examination करने वाला अपने Future (भविष्य) को Bright (उज्जवल) अवश्य बनाता है।

उपरोक्त सूत्र में सुभाषितकार कहते हैं कि, प्रत्येक व्यक्ति को अपने चरित्र (Character) का प्रतिदिन निरीक्षण करना चाहिए।

आज के समय में अधिकांश लोगों की नजर Career की तरफ है, Character (चरित्र) की तरफ नहीं। किन्तु अपने Mind में इतनी बात स्पष्ट रूप से set कर लीजिए कि,

Career = Light of Candle, यह कुछ समय बाद स्वतः बुझ जाएगी।

Character = Light of Diamond, सदैव स्थिर रहेगा, झिलमिलाता रहेगा।

Character अच्छा या बुरा हो सकता है, मेरा Character पशु जैसा है या सज्जन जैसा, इस बात का रोज निरीक्षण करना है।

पुराण में एक मजेदार बोधकथा दी हुई है :

एक बार नारद जी की इच्छा हुई कि स्वयंवर में राजकुमारी मुझे वरमाला पहनाए। सबसे अधिक सुन्दर दिखने के लिए वे विष्णु जी के पास गए और उनके रूप की याचना की। नारद जी के मोह को दूर करने के लिए विष्णु जी ने उन्हें बन्दर का रूप दिया। अब नारद जी को लगा, कि स्वयंवर में सबसे सुन्दर वे ही हैं, किन्तु वहाँ बैठे सब लोग उनकी मजाक उड़ाने लगे।

राजकन्या को आकर्षित करने के लिए नारद जी ने अनेक प्रयास किए, किन्तु राजकन्या ने उनका वानर रूप देखकर उनका तिरस्कार किया, अन्ततः नारद जी पूरी सभा में मूर्ख कहलाए। जब नारद जी ने अपना चेहरा पानी में देखा तो पता चला कि वे तो बन्दर जैसे दिख रहे हैं।

हमने भी अपने आप को जो मान लिया, क्या हम वैसे ही हैं? हृदय के आईने में निष्पक्ष भाव से अपने आप का निरीक्षण कीजिए, अपने अन्दर छिपी हुई पशुता आपको दिखेगी। आपको अपना सच्चा आन्तरिक स्वरूप दिखाई देगा।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अलग-अलग Chellenges आते हैं, किन्तु सबके लिए First and foremost challenge यह है, कि **"Know Yourself"** (खुद को पहचानो)

सन्त एरिस्टोटल ने इसी सन्दर्भ में कहा है, **"Knowing yourself is beginning of the wisdom."** Business का क्षेत्र हो, Political क्षेत्र हो, Social क्षेत्र हो या धर्म-अध्यात्म का, everywhere self-examination is most necessary.

यह self-examination हमारी life कार को right way पर आगे बढ़ाने का green signal है। यह self-examination हमारी life कार को wrong way पर आगे जाने से रोकने का red signal है।

यह self-examination हमारी wrong way जा चुकी कार को वापिस लाने का reverse gear है।
यह self-examination हमें great success दिलाने का super secret है।
यह self-examination हमारी life कार को right way पर आगे बढ़ाने का green signal है।
यह self-examination हमारी life exam में top करने का superior lesson है।

इस Self-Examination के कारण :

- स्नान करती युवती को विकार की दृष्टि से देखने वाला नरेन्द्र नामक युवक पवित्र, ब्रह्मचारी, ओजस्वी वक्ता और संस्कृति रक्षक स्वामी विवेकानन्द बना।

- पूरे जंगल को जलाकर खाक करने वाला, अनेक मानवों, पशु-पक्षियों को मारने वाला चण्डकौशिक सर्प स्वर्गगामी बना।

ऐसे अनेक Examples देखने को मिलते हैं।
आइए, Self-Examination के द्वारा अपने Character को Pure Gold जैसा शुद्ध बनाएँ।

Turn your mind, turn your life, turn your future.

नवलकथा

Anger : A Terror

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

साहित्य जगत के सभी रसों से परिपूर्ण, और युवा दिलों की धड़कन बने ऐसी वर्तमान Life Style बताने वाली इस नवलकथा के लेखक मुनिवर ने तो वास्तव में कमाल किया है। प्रभु-वचन रुपी बादाम को चॉकलेट के रैपर में डालकर सबको शील, सदाचार और संस्कृति की राह पर चलने को मजबूर करने वाला यह उपन्यास, कथा-जगत में एक Mile Stone साबित होगा, ऐसा विश्वास है।

अमरदत्त एवं रत्नमंजरी के मस्तिष्क में अलग-अलग घटनाएं बहुत तेज गति से चलचित्र की भांति चलायमान हो रही थीं... सत्यश्री... क्षेमंकर... चन्द्रसेन... पुत्रवधू... मुसाफिर... गुस्सा... मुनि... गोचरी ... प्रशंसा... बिजली...।

चिन्तन की इस प्रक्रिया में उनके श्वास उखड़ने लगे- मरण...विनाश...अंधेरा... बस अंधेरा..।
उनको चक्कर आने लगे और ऐसा अनुभव होने लगा कि जैसे उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई हो। खड़े रहना मुश्किल होने लगा। उसे लगने लगा कि किसी अज्ञात शक्ति ने उन पर नियंत्रण कर लिया है और मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया है।

वे धड़ाम से नीचे गिर पड़े। उनकी चेतना मंद पड़ती जा रही थी। अंततः धीरे-धीरे वह चेतना-शून्य हो गए।

अमरपुर नगरी का साम्राज्य चहुंओर विस्तीर्ण था। महल के गवाक्ष में बैठे मकरध्वज राजा मदन के मद का मानमर्दन करने वाली राजरानी मदनसेना के साथ अपने भावी जीवन पर विचार-विमर्श कर रहे थे। 'प्राणेश्वर! कितने ही वर्ष बीत गये, परंतु मेरी एक

इच्छा अभी तक पूर्ण नहीं हुई।' मदनसेना की इस शिकायत को सुनकर राजा मकरध्वज असह्य पीड़ा में डूब गये।

'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति...'। पुत्रहीन की सद्गति संभव नहीं है। इस प्रकार के वचन राजा के कान को बर्छी की तरह बींध जाते हैं। परंतु, क्या कर सकते हैं! विधि से बड़ा बलवान कोई नहीं है।

'मदनसेना! अभी तो तुम ऋतुवती नहीं हो। भगवान से प्रार्थना करो कि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करें।' राजा द्वारा उच्चरित इस प्रकार के वचन सुनकर मदनसेना कुछ आश्वस्त हुई।

रानी राजा के केश संवारने लगी। राजा मकर-ध्वज का केश-विन्यास पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध था।

रानी की पैनी नजर में एक सफेद बाल आ गया। रानी ने वह बाल खींच कर तोड़ दिया। 'आह! क्या कर रही हो मदना!' राजा ने बाल टूटने की पीड़ा अनुभव करते हुए कहा।

'कुछ नहीं। बस तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूं।'

'क्या?'

'यह देखो!'

रानी ने राजा के हाथ पर एक सफेद बाल रख दिया।

'यह कहां से निकला?'

रानी ने सस्मित हास्य से कहा- 'जहां से आह निकली थी।'

अचानक राजा मकरध्वज का चेहरा गंभीर हो गया। राजा के चेहरे पर अचानक आये इस परिवर्तन से रानी आश्चर्य चकित हो गई। कुछ क्षण में राजा की आंखों से आंसुओं की बरसात होने लगी।

'क्या हुआ प्राणनाथ?' रानी ने राजा के आंसुओं को देख कर पूछा।

'कुछ नहीं प्रिये! समय आ गया है।' राजा ने कहा।

श्रावण-भादों के गर्जन करते मेघ की मानिंद नगर की जनता की आंखें बरस रही थी। रुदनपूर्ण दारुण दुःख को व्यक्त करते हुए शब्द वातावरण को गंभीर बना रहे थे।

एक मोटे ताड़-वृक्ष के चारों तरफ भयानक कोलाहल हो रहा था। लोग इतने ज्यादा थे कि सूर्य की किरणें भूमि पर आने में असमर्थ थीं।

'आप लोग शान्त हो जाइये।' घटादार लम्बी दाढ़ी वाले एक कुलपति ने अपनी बुलंद गंभीर आवाज में कहा। वहां शान्ति छा गई।

'आप के प्राणप्रिय राजा आज के इस पावन अवसर पर राजर्षि बनने जा रहे हैं। यह शोक करने का नहीं, आनन्द का विषय है। आप का उन पर अपार प्रेम है, पर राजेश्वर जिस मार्ग का अनुसरण करने जा रहे हैं, वह अत्युत्तम है।' लोगों को समझाते हुए कुलपति ने कहा।

कुलपति ने मंत्री को संकेत किया। मंत्री सामने आया।

'आज हमारे प्रजावत्सल राज-राजेश्वर मकरध्वज संसार की मोह-माया का परित्याग कर अपना राज्य भार अपने अधिकारी को सौंप कर राजमाता मदनसेना के साथ तापस-व्रत स्वीकार करने के लिए तत्पर हैं।'

'इस संसार में पृथ्वी पर राजा तो बहुत हैं, परंतु पृथ्वीराज से योगिराज बनने वाले नहींवत् हैं। इन्हीं में से एक अपने महाराज हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है।' मंत्री ने तापसों के कुलपति की ओर देखते हुए कहा, 'मैं कुलपति से प्रार्थना करता हूं कि वे हमारे राजा मकरध्वज को तापस वेष अर्पण करें।'

इतना कह कर मंत्री शान्त हो गया। कुलपति ने मंत्रोच्चार आरंभ किया। राजा और रानी की आंखों में एक चमक आ गई। वे इस अनोखी

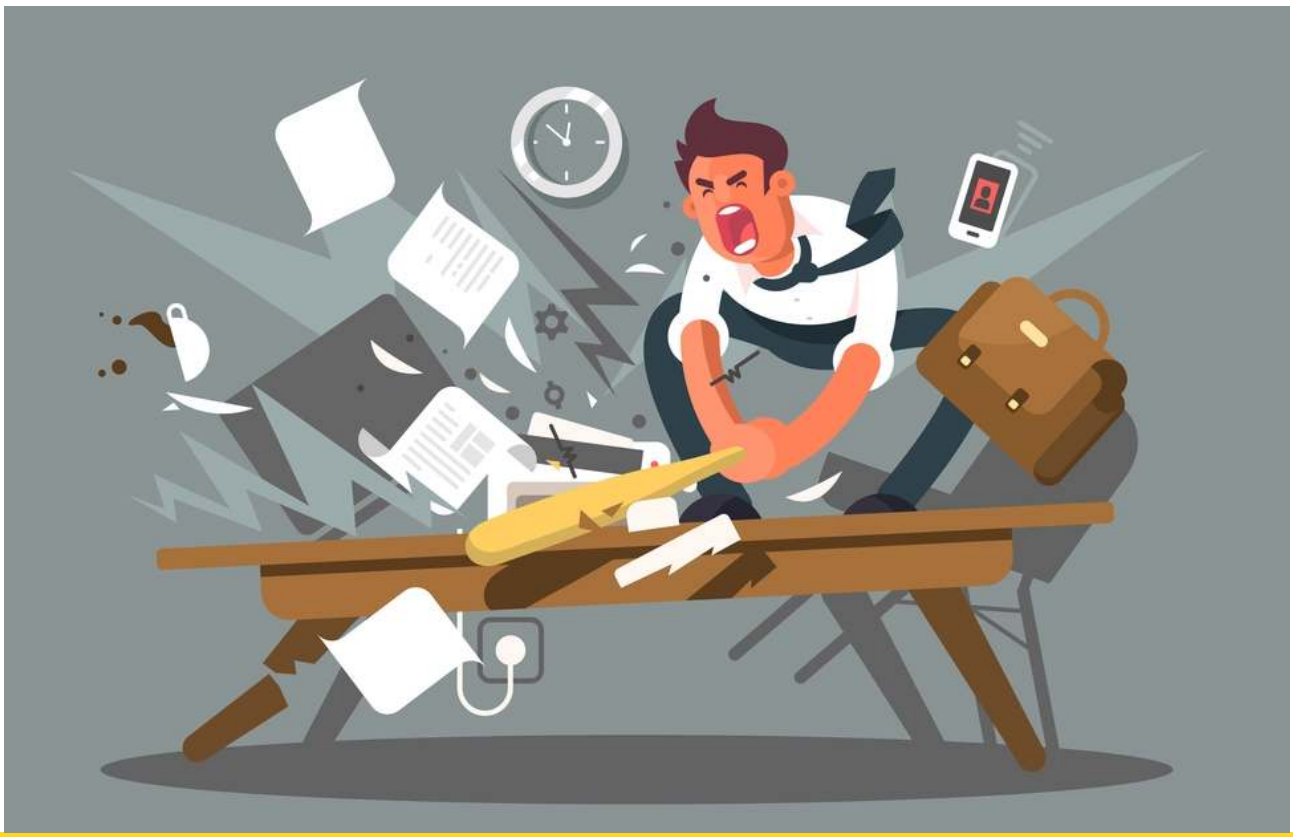

दीक्षा के लिए सजग हो गये।
कुलपति राजा के पास आया।

'आज मैं राजा मकरध्वज को तापस-दीक्षा प्रदान करता हूं।'

यह कह कर कुलपति ने राजा के हाथ में कमण्डल और वृक्ष-छाल का कपड़ा दिया। राजा ने अपना मुकुट उतार कर एक तरफ रख दिया। इसी प्रकार कुलपति ने रानी को भी दीक्षा प्रदान की।

जयनाद से पूरा वन क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। कुलपति राजा के पास आया और बोला- 'हमारे इस आश्रम में आप का स्वागत है। **महापराक्रमं कृतम्!**'

हिमालय के पर्वतों में खिली हरियाली मानो इस वन क्षेत्र में उतर आई हो। पक्षियों का कलरव इस शांत वातावरण में दिव्य संगीत की अनुभूति करा रहा था। राजा को तापस कुलपति बड़े ही सुन्दर ढंग से धर्म-तत्त्व समझाते थे।

गूढ़ गर्भवती राजतापसी मदनसेना राजतापस मकरध्वज के साथ वन में विचरण करते हुए मुक्त कंठ से बात कर रही थी।

अचानक राजतापसी नीचे भूमि पर बैठ गई। राजतापस उसके पास पहुंच गये।

'मदना! क्या हुआ तुम्हें? अचानक इस तरह कैसे नीचे बैठ गई?'
भयभीत राजतापस के चेहरे पर दीनता व्याप्त हो गई।

'प्राणेश्वर! मेरे पेट में बहुत पीड़ा हो रही है... कृपा कर कुछ करो न!'

राजतापसी घायल कबूतरी की तरह तड़प रही थी।

राजतापस ने आसपास देखा। वहां के वृक्ष फलहीन थे। कहीं भी पानी का नामोनिशान नहीं था। बातें करते हुए राजतापस एवं राजतापसी आश्रम से बहुत दूर निकल आये थे।

राजतापस ने दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ाई। आगे कुछ होगा, उनके मन में ऐसी आशा जगी।

'मैं आता हूं' कह कर तड़प रही राजतापसी को छोड़कर संभावित स्थल की ओर दौड़ पड़े।

कुछ दूर जाने पर ही एक विशाल सरोवर दिखाई दिया। राजतापस ने अपने कमण्डल को शीतल जल से भर लिया। पास में ही लाल मीठा फल दिखाई दिया। फलाहार के उद्देश्य से राजा ने थोड़े फल भी तोड़ कर अपने पात्र में धारण लिए।
वापस दौड़ते हुए वहां पहुंचे, जहां राजतापसी को छोड़ कर गये थे।

'मदना! हे मदना!' राजतापस तापसी को ढूंढने लगे। 'मदना...! हे मदना...!'

तभी अचानक उनके कानों में मद्धिम स्वर से रोने की सुनाई दी। उस आवाज का अनुसरण करते हुए वे वहां तक पहुंच गये, जहां से रोने की आवाज आ रही थी। वहां का दृश्य देख कर राजतापस का मन प्रफुल्लित हो उठा।

(क्रमशः)

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।